

हर दिन पिन्तेकुस्त

हर दिन पिन्तेकुस्त की आधिकारिक आठ-पाठ श्रृंखला

GATS
GLOBAL ASSOCIATION OF THEOLOGICAL STUDIES

globalmissions

UPCI
UNITED PENTECOSTAL CHURCH INTERNATIONAL
THE WHOLE GOSPEL • TO THE WHOLE WORLD • BY THE WHOLE CHURCH

हर दिन **पिन्तेकुस्त** श्रृंखला

विषय-सूची

पाठ एक
हर दिन पिन्तेकुस्त का परिचय

पाठ दो
तब और अब: हर दिन पिन्तेकुस्त

पाठ तीन
हर दिन पिन्तेकुस्त और वैश्विक साझेदारियाँ

पाठ चार
हर दिन पिन्तेकुस्त महान आदेश पर एक नया दृष्टिकोण

पाठ पाँच
हर दिन शिष्य

पाठ छह
डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव

पाठ सात
हर दिन पिन्तेकुस्त और बाइबल स्कूल

पाठ आठ
हर दिन पिन्तेकुस्त के लिए लक्ष्य

ये पाठ विश्व की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध हैं। यदि आप यह जानना चाहते हैं कि ये पाठ किसी विशेष भाषा में उपलब्ध हैं या इनका अनुवाद करने की अनुमति प्राप्त करना चाहते हैं, तो GATS@upci.org पर संपर्क करें।

हर दिन पेन्तेकुस्त श्रृंखला

परिचयात्मक पाठ

मुख्य पद

> वे यह नया गीत गाने लगे, "तू इस पुस्तक के लेने, और इसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है।" (प्रकाशितवाक्य 5:9)

हमारी शिक्षा और वितरण दृष्टिकोण

अपने दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए, हम अपने अनुभवी वरिष्ठ अगुवों को उत्साहित करते हैं कि वे उन्हें सिखाए गए पाठों को दोहराएँ और हर देश और स्थानीय कलीसिया में ज़मीनी स्तर पर दूसरों तक पहुँचाएँ। इस गुणात्मक तरीके का व्यापक असर होगा। वरिष्ठ अगुवें और प्रशिक्षक दूसरों के साथ सामग्री साझा करने के लिए तैयार और प्रेरित होंगे, और आखिरकार ज़मीनी स्तर तक पहुँचेंगे। इसके लिए ज़रूरी है:

स्पष्ट और संक्षिप्त सामग्री	सामग्री और सिद्धांतों को स्पष्ट, छोटे और आसानी से समझ में आने वाले प्रारूप में प्रस्तुत करे।
दोहराने योग्य भाषा	ऐसी भाषा जिसे वरिष्ठ अगुवे आत्मविश्वास के साथ दूसरों के साथ साझा कर सकें।
कहानी बताना	वास्तविक जीवन के अनुभवों की कहानियाँ और उदाहरण शामिल करें। इससे सामग्री संबंधित और साझा करने लायक बनती है।

कार्रवाई योग्य बातें	व्यावहारिक सलाह, उपकरण और संसाधन दें जिन्हें वे तुरंत लागू कर सकें, उपयोग कर सकें और दूसरों के साथ साझा कर सकें।
क्रमिक संचार/प्रवाह	प्रशिक्षक को प्रशिक्षित करो वाला दृष्टिकोण अपनाएं ताकि सामग्री आसानी से दूसरों तक पहुंचाई/संचारित की जा सके, और बदले में वे तैयार हो सकें।
गुणन उपकरण	वरिष्ठ अगुवों और प्रशिक्षक को प्रस्तुतिकरण सामग्री, मार्गदर्शिका, और संवादात्मक अभ्यास पुस्तिका या सामग्री दें ताकि सामग्री को दोहराने और साझा करने में मदद मिल सके।

"वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है न रुके" (प्रेरितों 5:42)।

परिचय

हम "हर देश और लोगों के समूह से दस लाख से ज़्यादा चेलों की एक बनी रहने वाली (टिकाऊ) वार्षिक कटनी" के लिए परमेश्वर पर विश्वास कर रहे हैं और इसके लिए काम कर रहे हैं।

यू. पी. सी. आई. ग्लोबल मिशन्स का मिशन/उद्धेश्य है "हर गोत्र और देश के लिए, यीशु। संदेश भेजना। संदेशवाहकों को प्रशिक्षित करना। आत्मनिर्भर, स्वयं प्रचार करने वाली, स्वयं शासित कलीसियाएं बनाना। सत्यता और पवित्रता में संगति स्थापित करना।"

"यूनाइटेड पेन्तेकुस्त चर्च इंटरनेशनल का उद्धेश्य है कि सम्पूर्ण कलीसिया के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में सम्पूर्ण सुसमाचार पहुंचाया जाए: एक प्रभावशाली तरीके से संगठित कोशिश की जाए; नए काम शुरू करने और उन्हें स्थापित करने के लिए बढ़ावा दिया जाए; हर संभावित तरीके से संसार में सुसमाचार फैलाया जाए; और एक साफ सेवकाई और संगति बनाई जाए और उसे बनाए रखा जाए।"

"सम्पूर्ण कलीसिया के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में सम्पूर्ण सुसमाचार।" हमारे पवित्रशास्त्र के अंतिम दर्शन को बाइबल की आखिरी पुस्तक, प्रकाशितवाक्य में लिखा गया, भविष्यवाणी की गई और

वादा किया गया है: "इस के बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी है।" (प्रकाशितवाक्य 7:9).

हमारे दर्शन को अक्सर "हर दिन पेन्तेकुस्त" कहा जाता है। हम सब मिलकर यू. पी. सी. आई. की वैश्विक कलीसिया और समुदाय को एकजुट करने के लिए काम कर रहे हैं, ताकि प्रभु की सामर्थ से हर साल हर देश, गोत्र और लोगों के समूह से दस लाख से ज़्यादा शिष्य पवित्र आत्मा की सामर्थ से हर दिन पेन्तेकुस्त का अनुभव कर सकें, खुद से उत्पन्न कर सकें और अपने समुदाय को बदल सके।



"और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था" (प्रेरितों के काम 2:44–47).

हर दिन पेन्तेकुस्त

हर दिन का अर्थ है:

हर दिन यीशु के नाम से पानी में बपतिस्मा	
हर दिन पवित्र आत्मा में बपतिस्मा	विश्वासी हर दिन पवित्र आत्मा की सामर्थ देने वाली उपस्थिति का अनुभव कर रहे हैं।
हर दिन सुसमाचार प्रचार	हर दिन दूसरों के साथ सुसमाचार बांटने से आत्माओं की कटनी मिलती है।
हर दिन शिष्यत्व	विश्वासी अपने विश्वास में बढ़ रहे हैं, शिष्य बन रहे हैं और हर दिन दूसरों को शिष्य बना रहे हैं।
हर दिन अलौकिक सेवकाई	विश्वासी हर दिन पवित्र आत्मा के वरदानों जैसे कि चंगाई, भविष्यवाणी और छुटकारा देने के काम करते हैं।

ये बातें हर दिन आत्मा से सामर्थ पाने वाले, सुसमाचार सुनाने वाले और शिष्य बनाने वाले जीवन जीने के महत्व पर ज़ोर देती हैं।

जेम्स जी. पोइट्रास के अनुसार , *'एक्ट्स: गॉड्स ट्रेनिंग मैनुअल फॉर टुडेज़ चर्च में*, आरंभिक कलीसिया *हर दिन* ये काम करती थी :

सुसमाचार प्रचार	प्रेरितों के काम 5:42; 8:4; 11:19–21
शिष्यत्व	प्रेरितों के काम 2:42–47; 5:42; 11:26
आराधना	प्रेरितों के काम 2:46–47; 5:42
प्रार्थना	प्रेरितों के काम 1:14; 2:42; 4:31; 6:4; 12:5
संगति	प्रेरितों के काम 2:42–47; 4:32–37
रोटी तोड़ना	प्रेरितों के काम 2:42, 46–47; 20:7
चिह्न, चमत्कार और आश्चर्य कर्म	प्रेरितों के काम 2:43; 4:30; 5:12; 6:8; 8:6–7; 14:3

जैसा कि प्रेरितों के काम 2:42–47 में बताया गया है, आरंभिक कलीसिया के हर दिन के काम, उनकी बढ़ोतरी, फलने-फूलने और महान आदेश को पूरा करने में बहुत मददगार थे।

ये हमेशा रहने वाले विश्वव्यापी अभ्यास और अनुशासन जो पहली सदी की कलीसिया में काम करते थे, वे इक्कीसवीं सदी की कलीसिया में भी उतने ही प्रभावशाली हैं।

इन अभ्यासों और अनुशासनों को अपनाकर और उन पर ज़ोर देकर, आज की कलीसिया भी वैसी ही बढ़ोतरी, जीवन शक्ति और प्रभाव को महसूस कर सकती है और करेगी।

महान आदेश पाँच पुस्तकों में लिखा है और यह सम्पूर्ण कलीसिया के लिए एक ईश्वरीय आदेश है। कोई आश्चर्य नहीं कि हम अक्सर कहते हैं, "सम्पूर्ण कलीसिया के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में सम्पूर्ण सुसमाचार।" हम सुसमाचार को हर जगह से हर जगह ले जाते हैं।

- मत्ती 28:19–20
- मरकुस 16:15
- लूका 24:44–47
- यूहन्ना 20:21
- प्रेरितों के काम 1:8

अभी तक नहीं पहुँचे हुए जन समूह

हाल ही में, उन लोगों के समूहों पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया है जिन तक अभी तक पहुँच नहीं है। यह एक ऐसा तरीका है जिससे हम उन लोगों और देशों तक पहुँच सकते हैं जिन तक अभी तक पहुँच नहीं हो पाई है। मिशन बदला नहीं है, लेकिन ऐसे रास्ते होने चाहिए जिन्हें मापा जा सके और जो वास्तविक हों।

हमारी धड़कन स्वर्ग के आदेश के साथ एक सीध में/समायोजित होनी चाहिए ताकि हम उन तक पहुँच सकें जिन तक पहुँच नहीं है। यह लक्ष्य उन लोगों तक सुसमाचार फैलाने पर है जिन्होंने इसे कभी नहीं सुना है, खासकर उन लोगों के समूहों (UPGs) में जो पहुँच से दूर हैं — ऐसे समुदाय जो मसीह के संदेश से ज़्यादातर अछूते रहते हैं, अक्सर भाषा, संस्कृति या भूगोल की वजह से अलग-थलग रहते हैं।

अभी तक न पहुँचे हुए जन समूहों (UPGs) तक पहुँचना कोई अकेला मिशन नहीं है बल्कि एक मिलकर किया जाने वाला काम है।

महान आदेश का ज़ोर सिर्फ़ देशों पर ही नहीं है, बल्कि उपेक्षित पड़ोस के लोग, खानाबदोश लोग हैं, और पास-दूर के देश के ऐसे लोगों पर भी हैं जहाँ यीशु के नाम के संदेश का प्रचार अभी तक नहीं हुआ है। कटनी का प्रभु हममें मसीह के महान आदेश के लिए एक समर्पण जगाए, जिसमें उन लोगों के लिए जुनून उत्पन्न हो जो अभी तक नहीं पहुँचे हैं, जहाँ सत्य की ज्योति कभी नहीं चमकी। आज भी 7,400 से ज़्यादा ऐसे समूह हैं जो अभी तक नहीं पहुँचे हैं, और अरबों लोग ऐसे हैं जो शायद हमारे सुसमाचार प्रचार के इरादतन प्रयासों के बिना यीशु के बारे में कभी नहीं सुन पाए। उन तक अभी नहीं पहुँचा गया है, लेकिन उन्हें कभी नहीं भूलना चाहिए। भाषा बाँटती है, कुछ क्षेत्र दुर्गम हैं, और रूढ़िवादी परंपराएँ दीवारें खड़ी कर सकती हैं, लेकिन हमें समुदायों को यीशु मसीह से जोड़ने के लिए इन सबसे ऊपर उठना होगा।

यह प्रार्थना के साथ तैयारी से शुरू होता है; हर सफल मिशन की नींव उत्साही मध्यस्थता की प्रार्थना है। प्रार्थना करने वाले लोगों को एक नए उद्धेश्य के लिए तैयार, ऊर्जा/जोश से भरपूर और सामर्थी होने की ज़रूरत है: उन तक पहुँचने के लिए जिन तक अभी पहुँचे नहीं है।

हम मिशनरियों और कलीसिया स्थापना करने वालों को ऐसे ही नहीं भेजते; हम इरादतन उन्हें उन क्षेत्रों में भेजते हैं जहाँ सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है। यह प्रार्थना की तैयारी, सोच-समझकर भेजने और लगातार समर्थन से पूरा और मज़बूत होता है।

हर दिन पेन्तेकुस्त का दर्शन सिर्फ़ धर्म बदलने वालों की संख्या के बारे में नहीं है, बल्कि उन शिष्यों की गुणवत्ता के बारे में है जो शिष्य बनाते हैं। इसका एक लहर जैसा असर होता है। जब कोई किसी ऐसे व्यक्ति तक पहुँचता है जो अभी तक नहीं पहुँचा है, तो इसका असर बहुत ज़्यादा होता है।

हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला

तब और अब

मुख्य पद

> कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे। वरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। (प्रेरितों 2:17–18)

परिचय

हर दिन पेन्तिकुस्त कैसा दिखेगा? जवाब के लिए, शायद हमें पेन्तिकुस्त के दिन कलीसिया के जन्म तक वापस जाना होगा।

योएल 2:28–32 की भविष्यवाणी का पतरस ने प्रेरितों के काम 2:17–21 में उल्लेख किया था। यह बताता है कि परमेश्वर अंतिम दिनों में सभी मनुष्यों पर अपना आत्मा उंडेल रहा है। यह सच में पेन्तिकुस्त के दिन पूरा हुआ, जैसा कि प्रेरितों के काम 2 में लिखा है। लेकिन यह यहीं नहीं रुका। तब से आत्मा का उंडेलना जारी है और आज भी पूरा हो रहा है। पवित्र आत्मा उद्धार देने और विश्वासियों को गवाही, सेवा और सेवकाई के लिए सामर्थ देने में लगातार दिया जा रहा है।

> उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा;
> तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे,
> और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।
> तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा।। (योएल 2:28–29)

हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला
ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज

पवित्र आत्मा का उंडेलना अंतिम दिनों की एक पहचान है, और यह परमेश्वर के अपने लोगों को उसके वादे के अनुसार लौटने के लिए तैयार करने की योजना का एक खास पहलू है। हम सभी मनुष्यों पर उसकी उपस्थिति और सामर्थ के लगातार उंडेलने की उम्मीद कर सकते हैं।

पेन्तिकुस्त के उस असली (मूल) दिन पर जो भीड़ इकट्ठा हुई थी, वह सप्ताहों का पर्व, पेन्तिकुस्त मनाने के लिए यरूशलेम में अलग हो गई। वे अलग-अलग तरह की संस्कृतियों, भाषाओं और आर्थिक पृष्ठभूमियों को दिखाते थे और अपनी साझी विरासत और विश्वास की वजह से एक थे। वे प्राचीन संसार के कोने-कोने से आए यहूदी तीर्थयात्रियों का एक अलग और जोशीला समूह था । वे दूर-दूर से आए थे।

जब वे शहर में इकट्ठा हुए, तो ये भक्त पुरुष और स्त्रियाँ सीनै पर्वत पर तोरह दिए जाने की याद में यहूदी पर्व की आराधना करने और उसे मनाने के लिए उत्सुक थे। उन्हें क्या पता था कि यह दिन इतिहास में एक अहम और केन्द्रीय पल बन जाएगा, जो पवित्र आत्मा के उंडेले जाने से मसीही कलीसिया के जन्म को दिखाएगा।

कृपया ध्यान दें कि AI टेक्नोलॉजी (मेटा) की मदद से, अगर इक्कीसवीं सदी में आज पेन्तिकुस्त का दिन होता, तो भीड़ कैसी होती, इसका छोटा सा ब्यौरा यहाँ दिया गया है: यरूशलेम में जमा हुई भीड़ अलग-अलग संस्कृतियों, उम्र और पृष्ठभूमियों का मिला-जुला रूप होगी। वे तकनीकी-प्रेमी, वैश्विक रूप से जुड़े हुए और अलग-अलग तरह के लोगों के समूह होंगे।

सोचिए, हर महाद्वीप से आए लोगों का एक समुद्र होगा, जिनके हाथ में स्मार्टफोन होंगे और जो हर पल को सोशल मीडिया पर कैद करेंगे। इस भीड़ में जवान लोगों के साथ-साथ बड़े-बुज़ुर्ग भी होंगे, जो सभी अपने विश्वास और जिज्ञासा से एकजुट होंगे।

आप हर जगह से लोगों को एक साथ खड़े देखेंगे, जो पवित्र आत्मा के उंडेलने का अनुभव करने के लिए उत्सुक होंगे। अलग-अलग भाषा और संस्कृति के लोग पवित्र आत्मा के उंडेलने का इंतज़ार कर रहे होंगे, जिससे हवा में उम्मीद भरी होगी।

जैसे-जैसे कार्यक्रम (घटना) आगे बढ़ेगा , भीड़ कई भाषाएँ बोलने लगेगी, लोग अन्य-अन्य भाषाएँ बोलने लगेंगे, भविष्यवाणी करने लगेंगे और परमेश्वर की आराधना करने लगेंगे। यह सच में एक वैश्विक, पेन्तिकुस्त अनुभव होगा, जो अलग-अलग संस्कृतियों, सीमाओं और पीढ़ियों के लोगों को एक करने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ को दिखाएगा।

हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला
ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज

प्रकाशितवाक्य 7:9 में एक दर्शन बताया गया है जिसमें हर देश, गोत्र , लोग और भाषा के बहुत सारे लोग परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होकर उसकी आराधना कर रहे हैं। अगर यह दृश्य आज हो, तो यह कुछ ऐसा दिख सकता है:

सोचिए संसार के कोने-कोने से आए लोगों का एक बड़ी भीड़ । वे अपनी अलग-अलग सांस्कृतिक विरासत को दिखाने वाले कपड़े पहने हुए हैं: अफ़्रीकी डैशिकी, एशियाई किमोनो, लैटिन अमेरिकी पोंचो और यूरोपीय सूट। वे सभी उम्र के हैं, बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक, और वे सभी परमेश्वर की आराधना में एक साथ हैं।

भीड़ में अलग-अलग रंग की त्वचा, बालों के रंग और चेहरों की विशेषताएं होती हैं। आप दिव्यांग लोगों, अलग-अलग सामाजिक –आर्थिक पृष्ठभूमियों वाले लोगों और अलग-अलग व्यवसाय वाले लोगों को देखते हैं। वे सभी बराबर हैं, सभी बहुमूल्य है, और परमेश्वर की दृष्टि में सभी प्रिय हैं।

जब वे आराधना करते हैं, तो आप दर्जनों भाषाएँ सुनते हैं: मैंडरिन, स्पैनिश, अरबी, अंग्रेज़ी, फ़्रेंच, पुर्तगाली, और भी बहुत कुछ। लेकिन भाषा की रुकावटों के बावजूद, वे सभी एक ही गीत गा रहे हैं और एक ही संदेश का प्रचार कर रहे हैं: "उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय-कार हो!" (प्रकाशितवाक्य 7:10)।

इस विविधता में, आराधना करने वाली मंडली में, आप परमेश्वर के राज्य की सुंदरता देखते हैं , जहाँ हर देश, गोत्र, प्रजा और भाषा के लोग मौजूद हैं।

हर दिन पेन्तिकुस्त मनाना एक बहुत अच्छा अनुभव होगा, जो लोगों की ज़िंदगी, समुदायों और पूरे संसार को बदल देगा। यहाँ एक झलक है कि यह कैसा हो सकता है।

हर दिन पेन्तिकुस्त ऐसा होगा जैसे हर सुबह उठना और आपको लगे कि परमेश्वर आपके साथ हैं और आप पर मंडरा रहे हैं। आत्मा आपको सामर्थ देने और मार्ग दिखाने के लिए हमेशा मौजूद रहता है।

हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला
ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज

हर दिन, अलग-अलग पृष्ठभूमि, संस्कृति और भाषाओं के लोग एक साथ आते हैं, और पवित्र आत्मा उनके बीच की दूरियों को भरता है, जिससे वे चमत्कारी तरीकों से एक-दूसरे को समझ पाते हैं और बातचीत कर पाते हैं।

कलीसिया अलौकिक गतिविधि का केंद्र बन जाती है, जहाँ नियमित तौर पर चंगाई, चमत्कार और छुटकारा मिलता है, साथ ही आत्मा के दूसरे वरदान भी प्रकट होते हैं। परमेश्वर की सामर्थ साफ़ दिखती है, और लोग आशा, परिवर्तन और परमेश्वर के साथ गहरे संबंध की खोज में कलीसिया की तरफ़ खिंचे चले आते हैं।

विश्वासियों के तौर पर, आपको सक्रिय, साहसिक गवाही देने, आत्मविश्वासी, दया और साफ़-साफ़ सुसमाचार साझा करने की सामर्थ मिलती है। पवित्र आत्मा आपको बोलने के लिए वचन, काम करने की हिम्मत और ज़िंदगी की अलग-अलग मुश्किलों से निपटने की समझ देता है।

हर दिन पेन्तिकुस्त का मतलब है कि कलीसिया बदलाव लाने वाली एक सामर्थ बन जाती है, जो समुदायों, शहरों और देशों पर असर डालती है। विश्वास करने वाले लोग ज़रूरतमंदों की देखभाल करने और मसीह का प्रेम दिखाने के लिए तैयार होते हैं।

इस माहौल में, शिष्य बनाना एक जीवनशैली बन जाता है, जिसमें विश्वासी एक-दूसरे से सीखते हैं, अपने विश्वास में बढ़ते हैं, और दूसरों को उत्पन्न करने वाले बन जाते हैं। कलीसिया शिष्यों के लिए एक ऊष्मानियंत्रक बन जाती है, जिसे संस्कृति और समाज को आकार देने का अधिकार मिलता है।

हर दिन पेन्तिकुस्त होना सच में एक क्रांतिकारी अनुभव होगा, जो कलीसिया, समुदायों और संसार को बदल देगा। इसके लिए पवित्र आत्मा के सामने समर्पण करने, परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा करने और पूरी तरह से आज्ञा मानने वाला जीवन जीने की इच्छा की ज़रूरत होगी।

यहां एक झलक दी गई है कि वैश्विक कलीसिया, राष्ट्रीय कलीसिया और स्थानीय कलीसिया के लिए हर दिन पेन्तिकुस्त कैसा दिख सकता है।

हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला
ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज

वैश्विक कलीसिया

एकता की प्रार्थना	हर देश, गोत्र और भाषा के विश्वासी प्रार्थना में एक साथ आते हैं, और परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ चाहते हैं।
वैश्विक बेदारी	पेन्तिकुस्त की सामर्थ संसार भर में एक ही समय पर होती हैं, जिससे बड़े पैमाने पर नई बेदारी और जागरूकता फैलती है।
अंतर-सांस्कृतिक सहयोग	अलग-अलग पृष्ठभूमि की कलीसियाएं और सेवकाईयां मिलकर काम करती हैं, और परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए संसाधन, कार्यकुशलता और उत्तम अभ्यास को साझा करते हैं।
तेजी से किया जाने वाला मिशनरी कार्य	पवित्र आत्मा विश्वासियों को महान आदेश को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है, जिसके परिणामस्वरूप तेज़ी से कलीसिया की स्थापना, शिष्य बनाना और सुसमाचार प्रचार होता है।

राष्ट्रीय कलीसिया

राष्ट्रीय बेदारी	पूरे देश में पेन्तिकुस्त के समान बेदारी होती है, जिससे बड़े पैमाने पर नई जागृति और जागरूकता फैलती है।
एकता	प्रार्थना, आराधना और मिशन में एक हो जाओ, और सुसमाचार के लिए मतभेदों को एक तरफ रख दो।

नवीनीकृत सुसमाचार प्रचार	विश्वासियों को हियाव और स्पष्ट रूप से सुसमाचार बांटने का अधिकार मिलता है, जिससे नए विश्वासियों की संख्या में काफ़ी बढ़ोतरी होती है।

स्थानीय कलीसिया

जीवंत उपासना	आराधना की सेवाओं में परमेश्वर की उपस्थिति होती है, जिसमें विश्वासी हृदय से स्तुति, गहन प्रार्थना और अलौकिक प्रकटीकरण का अनुभव करते हैं।
सशक्त सुसमाचार प्रचार	विश्वास करने वाले अपने पड़ोसियों, दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ सुसमाचार साझा करने के लिए तैयार और सशक्त होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप नए विश्वासियों की एक लगातार धारा बनती है।
शिष्यत्व और नेतृत्व विकास	कलीसिया शिष्य बनाने और नेतृत्व विकास को प्राथमिकता देती है, और अगुवों की एक नई पीढ़ी तैयार करती है जो दूसरों की सेवा करने और उन्हें मज़बूत बनाने के लिए तैयार हैं।
सामुदायिक परिवर्तन	कलीसिया समुदाय में बदलाव का केंद्र बन जाती है, जहाँ विश्वासी सेवा, दया और न्याय के कामों में शामिल होते हैं।
अलौकिक सेवकाई	कलीसिया अलौकिक सेवकाई का अनुभव करती है, जिसमें विश्वासी पवित्र आत्मा के वरदानों, जैसे कि चंगाई, भविष्यवाणी और छुटकारे, के काम करते हैं।

हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला
ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज

इनमें से हर संदर्भ, हर दिन पेन्तिकुस्त को परमेश्वर की उपस्थिति की गहरी भावना, सुसमाचार प्रचार और शिष्य बनाने का जोश, और एकता, प्रार्थना और अलौकिक सेवा के लिए समर्पण से पहचाना जाएगा।

हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

हर दिन पिन्तेकुस्त और वैश्विक साझेदारियां

मुख्य पद

जब पिन्तेकुस का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। (प्रेरितों 2:1)

परिचय

महान आदेश को पूरा करने के लिए एक वैश्विक दर्शन और साझेदारी की आत्मा की ज़रूरत होती है। कोई भी अकेली कलीसिया, संस्था या देश अकेले इस मिशन को पूरा नहीं कर सकता। रणनीतिक सहयोग, साझा संसाधनों और संगठित प्रयासों से, सुसमाचार पृथ्वी के हर कोने तक पहुँच सकता है।

लोग हमेशा शिष्य बनने की प्रक्रिया के अलग-अलग स्तरों से गुज़रते रहते हैं। हमें लोगों को सुसमाचार प्रचार से शिक्षा की ओर ले जाना चाहिए।

हमारी मशकें इस बड़ी बढ़ोतरी को संभालने के लिए काफी नहीं हैं। यह दृष्टांत श्रोताओं को यह दिखाने के लिए है कि यीशु की नई शिक्षाओं को यहूदी उपवास जैसे अभ्यासों की पुरानी मशकों में नहीं रखा जा सकता। इस नए दाखरस को पुरानी मशकों में डालने से वह खराब हो जाएगा, और लोग पुरानी और नई दोनों मशकों को खो देंगे।

डिजिटल जुड़ाव

हम नए माध्यमों (मीडियम) का उपयोग करके कंटेंट (विषय सूची) बना सकते हैं जो लोगों को आज की जगह पर पहुंचाए। कंटेंट (विषय सूची) को बाइट-साइज़ (मूलभूत इकाई) सामग्री में बांटना होगा।

यू पी सी आई (UPCI) ग्लोबल मिशन्स के महानिदेशक एडम हनले ने लिखा, "इस पीढ़ी की एक आलोचना यह है कि उनका ध्यान बहुत कम समय तक रहता है, शायद इसलिए क्योंकि वे सिर्फ़ निजीकृत, चयनित और व्यवस्थित कंटेंट (विषय सूची) देखते हैं जो संक्षिप्त, सटीक और उनके लिए बनाया गया हो। ध्यान अवधि का समय पहले से भी कम हो गया है…यह एक पक्की कमज़ोरी है। लेकिन आइए तकनीकी का उपयोग करके उनसे वहीं मिलें, न कि सिर्फ़ उनकी आलोचना करें। उनसे वहीं मिलकर, हम उनमें ज़्यादा भूख पैदा करने में मदद कर सकते हैं क्योंकि आत्मा उन्हें ऐसे चुने हुए कंटेंट की ओर ले जाता है जो उनसे व्यक्तिगत रूप से बात करता है। इस पीढ़ी को ऐसे कंटेंट की ज़रूरत है जो मीडिया की ताकत का उपयोग करके पीढ़ी की कमज़ोरियों तक पहुँचे।"

अगर संसार भर में हर यू पी सी (UPC) में हर महीने दो नए शिष्यों की बढ़ोतरी होती है, तो इसका नतीजा यह होगा कि हमारा हर दिन पिन्तेकुस्त का लक्ष्य: 45,000 x 2 x 12 =1,080,000 नए शिष्य हर वर्ष होंगे।

वर्ष के हर दिन पिन्तेकुस्त के दिन का शुद्ध परिणाम (जैसे मूल पिन्तेकुस्त के दिन 3,000): 3,000 x 365 = 1,090,000 हर वर्ष।

पिछले वर्षों की तुलना में प्रतिशत बढ़ोतरी कुछ लोगों के लिए काम कर सकती है। प्रतिशत बढ़ोतरी हर देश में अलग-अलग होती है, जो लक्ष्यों और वास्तविकता पर निर्भर करती है। साफ़ है कि 5% बढ़ोतरी में बहुत समय लगेगा, लेकिन 20% बढ़ोतरी बहुत जल्दी होगी।

हमारा ज़्यादातर प्रतिधारण (जुड़ाव) बाइबल अध्ययन, मित्रता और व्यक्तिगत संबंधों से होता है। इसमें महासभाओं और सम्मेलनों जैसी खास सभाओं में इरादतन बोना और काटना भी शामिल है। साथ ही, हमें अपनी राष्ट्रीय और स्थानीय कलीसियाओं को इन कार्यकर्मों के अलावा आत्माओं को जीतने और शिष्य बनाने की संस्कृति बनाने में मदद करनी चाहिए। इसके लिए कई तरह की पद्धति होनी चाहिए। सिर्फ सुसमाचार प्रचार और शिष्य बनाना ही काफी नहीं हैं। प्रतिधारण (जुड़ाव) लक्ष्य काफी नहीं है। इसके लिए व बहुआयामी दृष्टिकोण आवश्यक है। इन रणनीतियों और पाँच प्रकार की सेवकाई के काम को एक में मिलाने से हम तेज़ी से लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

हर दिन पिन्तेकुस्त सिर्फ़ एक कार्यक्रम नहीं है; यह एक जीवनशैली और दर्शन है जो हमारे निर्णयों और लक्ष्यों को निर्देशित करता है।

यू पी सी आई (UPCI) प्रेरिताई आंदोलन में बेदारी लाने और कटनी में अग्र-दल है। यह इसके बनने के दिनों से ही एक जैसा रहा है। यह हमारे डी एन ए (DNA) में, हमारी कलीसियाई संस्कृति में है, और कभी नहीं बदलेगा।

वैश्विक कलीसिया शानदार है। एडम हनले ने बताया कि वह कुछ खास परिस्थितियों के बारे में प्रार्थना कर रहे थे, और प्रभु ने उन्हें एक वचन दिया : "तुम मेरी देह को स्थानीय संदर्भ में देखते हो, और तुम सीमाओं (बाधाओं) पर दुख मनाते हो। मैं अपनी देह को वैश्विक स्तर पर देखता हूँ। वह हमेशा विजय में है, हमेशा शांति में है, हमेशा बढ़ रही है, और हमेशा भरपूर है। देह हमेशा बढ़ती है और कोशिकाओं को खोती है, लगातार बदलती रहती है, लेकिन इससे देह कम नहीं होती । मेरी देह कम नहीं होती ।"

यूनाइटेड पेंटीकोस्टल चर्च इंटरनेशनल के वैश्विक परिषद सदस्यों में से ही, हमारे पास लगभग 60 लाख (छह मिलियन) लोग हैं। हाल के एक वर्ष में, उत्तरी अमेरिका के अनुमानों को मिलाकर, हमने देखा कि 338,661 लोगों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया, और 266,422 लोगों ने प्रभु यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा लिया।

अभी, संसार में 210 देश हैं, और इनमें से 200 में हमारी उपस्थिति पक्की है। भौगोलिक पैमाने पर, हम हर देश की तरफ बढ़ रहे हैं। हम यह पता लगाने के लिए सक्रियता से शोध कर रहे हैं कि संसार के 17,500 लोगों के समूहों में से किनमें यू पी सी आई (UPCI) की उपस्थिति है।

ज़मीन के नज़रिए के अलावा, हमारा संसार को देखने का एक और तरीका भी है, और वह है लोग, भाषाएँ और संस्कृतियाँ। एक अलग नज़रिए के लिए एक अलग दृष्टिकोण की ज़रूरत होती है।

हमें एक "संपूर्ण" कलीसिया की आवश्यकता है क्योंकि जब कलीसिया संपूर्ण होगी तब सम्पूर्ण सुसमाचार सम्पूर्ण संसार तक पहुंचेगा।

ज़्यादातर स्वस्थ, बढ़ते राष्ट्रीय कामों में उतना ही स्वस्थ बाइबल स्कूल कार्यक्रम होता है। वे न सिर्फ़ एक केन्द्रीय जगह पर काम कर रहे हैं, बल्कि उन्होंने अलग-अलग तरह के काम किए हैं, और प्रशिक्षण को वहाँ तक पहुँचाया है जहाँ लोग हैं।

हमें सभी नेतृत्व स्तरों पर दल (टीम) बनाने के बारे में सोचना (इरादतन होना) चाहिए। हम सिर्फ़ अपनी नेतृत्व संरचना के प्रभावशाली होने पर ही आगे बढ़ सकते हैं।

हम अपने देशों के शिक्षकों को उपकरण (सामग्री) देने और तैयार करने के लिए सभी क्षेत्रों में अपने शिक्षक दल विकास सेमिनार को बढ़ा सकते हैं।

सुसमाचार सिर्फ़ एक सिद्धांत से कहीं ज़्यादा है। यह एक प्रेरिताई पिन्तेकुस्त अनुभव है। यह सिर्फ़ रविवार या बुधवार को ही नहीं, बल्कि हर दिन एक परिवर्तित जीवन और जीवनशैली में बदल जाता है।

सेवकाई कोई कार्यक्रम नहीं है; यह हमारी पहचान का नतीजा है। "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।" (I पतरस 2:9).

मत्ती 9:38 में एक दिलचस्प शब्द या विषय है। यूनानी शब्द *एकबालो* का मतलब है ज़ोर से बाहर निकालना या मजबूर करना। कटनी का प्रभु (स्वामी) सचमुच मज़दूरों को फसल के सभी हिस्सों में जाने के लिए मजबूर करता है। यह बहुत ज़्यादा अत्यावश्यकता का एहसास कराता है।

"तब उस ने अपने चेलों से कहा, पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे" (मत्ती 9:37–38) ।

फसल बिना तैयारी, रोपण और पानी देने के नहीं होती। "हम भले काम करने में हियाव न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।" (गलातियों 6:9). "जो आंसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। चाहे बोने वाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियां लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा" (भजन संहिता 126:5–6)। "क्या तुम नहीं कहते, कि कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूं, अपनी आंखे उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं" (यूहन्ना 4:35)।

सुबह के 3:30 बज चुके हैं, और मैं पूरी तरह जागा हुआ हूँ। मेरे मन में आत्माएँ हैं! कल सुबह की प्रार्थना में, मैंने ये वचन पढ़े और उन्हें भूल नहीं पा रहा हूँ: "परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है।" (नीतिवचन 10:5 ब)। यहाँ सिद्धांत यह है कि जब इतना

काम करना हो तो हमें सोना नहीं चाहिए। परमेश्वर ने हमारे लिए संसार भर में एक बड़ी कटनी तैयार की है, और हमें इसके लिए जागना चाहिए।

"कटनी का समय बीत गया, फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गई, और हमारा उद्धार नहीं हुआ" (यिर्मयाह 8:20)। इसलिए, "जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता" (यूहन्ना 9:4)।

गर्मियां जल्दी खत्म होने वाली हैं। जल्द ही, फसल कट जाएगी। हमें उन लोगों की आवाज़ और ज़रूरतों को समझना होगा जिनकी कटनी नहीं हुई है और उनके लिए कुछ करना होगा। मैं कुछ अवसरों के बारे में कुछ वाक्यों में बताता हूँ:

- इस ग्रह पर 8.2 अरब लोग रहते हैं; उनमें से आधे से ज़्यादा लोगों ने न तो सुसमाचार सुना है और न ही यीशु का नाम सुना है।
- 31 ऐसे देश हैं जिनमें पहुँचने की दिक्कत है। इन्हें बंद दरवाज़े माना जाता है। हमें उन दरवाज़ों को पूरी तरह खोलने के लिए सक्रिय तरीके खोजने होंगे।
- यहां लगभग 17,313 खास लोगों के समूह हैं; उनमें से 7,188 ऐसे हैं जिन तक पहुंच नहीं है। इसके अलावा, 1,100 और ऐसे लोगों के समूह हैं जिन तक कम पहुंच है। इनमें से कुछ समूह पूरे देश जितने बड़े हैं। कई समूह 10/40 के झरोखों में मौजूद हैं। इस क्षेत्र को अक्सर प्रतिरोधी पट्टी कहा जाता है, जिसमें संसार के ज़्यादातर सबसे गरीब लोग और संसार के ज़्यादातर मुस्लिम, हिंदू और बौद्ध शामिल हैं।
- 4/14 के झरोखों में 1 अरब 90 करोड़ (1.9 बिलियन) बच्चे हैं जिन्हें परमेश्वर का वचन सुनने की ज़रूरत है, जिससे यह लोगों के समूह में सबसे बड़ा बन जाता है। कुछ महाद्वीपों में 50 प्रतिशत बच्चे हैं। मैंने https://414movement.com/ साइट पर ये सही शब्द देखे: "एक पीढ़ी को यीशु के साथ जीवन जीने के लिए जगाना। अगर कोई बच्चा यीशु के साथ एक असली संबंध में आ सकता है, तो न सिर्फ़ उसकी ज़िंदगी बदलेगी, बल्कि वह अपने समुदाय और अपने आस-पास के संसार को भी बदल सकता है।"

"और समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है" (रोमियों 13:11)। हम अकेले संसार तक नहीं पहुँच सकते। इसके लिए सभी प्रेरिताई पीढ़ियों को मिलकर मिशन पर ध्यान देना होगा, दान देना होगा, जाना होगा, प्रार्थना करनी होगी, या इन तीनों में

से कोई भी मिला-जुला तरीका अपनाना होगा। डैनियल डेक ने अपने संदेश "पीढ़ी दर पीढ़ी" में समझाया कि फसल की सफलता ज़िंदा रहने के लिए बहुत ज़रूरी है। जब बोने या कटाई का समय होता है, तो हर कोई इसमें शामिल होता है। कभी-कभी स्कूल भी बंद हो जाता है, और खेत सबका केंद्र बन जाता है। तीन पीढ़ियों को एक साथ खेत में काम करते देखना कोई अजीब बात नहीं है क्योंकि सफलता, ज़िंदा रहना और मौसम (समय) इसकी मांग करते हैं। हमें एक साथ दौड़ना और काम करना सीखना होगा।

एक शिष्य के सबसे साफ़ लक्षण हैं सीखने की क्षमता, परमेश्वर के लिए भूख, और आगे बढ़ने की गति ।

स्थिरता, भरोसे और बड़े दर्शन के तहत सहयोग को बढ़ावा देने वाले माहौल ने हमें आज इस मुकाम पर पहुंचाया है।

यू पी सी आई (UPCI) में वैश्विक दर्शन कोई नई बात नहीं है ; यह एक प्रेरिताई आंदोलन के तौर पर हमारे डी एन ए (DNA) में है

गेट्स (GATS) शिक्षक दल विकास कार्यक्रम जो हर दिन पिन्तेकुस्त दर्शन को पूरा करने में मदद करते हैं और बढ़ावा देते हैं, उनके लिए "शिक्षक और बाइबल स्कूल को स्थानीय बनाना" पाठ्यक्रम सामग्री की समीक्षा करना अच्छा रहेगा। यह गुणात्मकता और शिष्यत्व पर बहुत अच्छा कंटेंट (विषय वस्तु) प्रदान करता है।

उस पाठ के इस वाक्यांश पर ध्यान करे: "संसार की आबादी तेज़ी से बढ़ रही है और प्रशिक्षित पासबानों की सप्लाई (आपूर्ति) कम हो रही है, क्योंकि उनकी मांग पूरी नहीं हो पा रही है, इसलिए कम समय में ज़्यादा शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए कुछ करना होगा। संसार भर की मंडलियों में हमारे पास बहुत सारी मजदूर सेना है जिसे पकी हुई फ़सल के शिष्य बनाने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। मैं अब भी मानता हूँ कि किसी भी देश में एक मज़बूत कलीसिया के लिए पासबानों, कामों और राष्ट्रीय कलीसिया नेतृत्व के लिए पूर्णकालिक प्रशिक्षण ज़रूरी है, लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि मसीह की देह में 'संसार को उलट-पुलट करने' की क्षमता है (प्रेरितों के काम 17:6)।"

हर दिन पिन्तेकुस्त के चार तत्वों की पहचान की गई है। उनमें शामिल हैं:

वैश्विक साझेदारी

"जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा" (यूहन्ना 17:21)।

एक संयुक्त, वैश्विक रूप से जुड़ी हुई कलीसिया महान आदेश को पूरा करने में एक शक्तिशाली ताकत है। एक साथ काम करके, प्रेरिताई पिन्तेकुस्त विश्वासी यह पक्का कर सकते हैं कि हर देश, गोत्र और भाषा यीशु मसीह में जीवन बदलने वाला उद्धार का संदेश सुनें।

महान आदेश को पूरा करने और हर गोत्र, देश और भाषा तक पहुँचने के लिए वैश्विक साझेदारी बहुत ज़रूरी है। महान आदेश को पूरा करना कोई अकेला मिशन नहीं है; यह एक संयुक्त, मिलकर किया गया काम है जिसे हम सब मिलकर परमेश्वर के साथ साझेदारी में करते हैं। हम अकेले जितना कर सकते हैं, उससे कहीं ज़्यादा हम मिलकर कर सकते हैं।

"मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। इसलिये न तो लगाने वाला कुछ है, और न सींचने वाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ाने वाला है … क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।" (I कुरिन्थियों 3:6–7, 9)।

हमारा मिशन हमें संसार भर में सुसमाचार फैलाने और सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाने के लिए मजबूर करता है। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे कोई भी राष्ट्रीय कलीसिया या संस्था अकेले हासिल कर सकती है। इसके लिए सभी विश्वासियों के बीच एकता, सहयोग और वैश्विक साझेदारी की ज़रूरत है। साझा किए गए संसाधन, संयुक्त प्रयासों और आपसी सहयोग के ज़रिए, हमारी संगति यीशु मसीह के संदेश को संसार तक प्रभावशाली रूप से और कुशलतापूर्वक पहुँचा सकती है।

वैश्विक साझेदारी के लिए बाइबिल में एक आधार है। बाइबिल लगातार मसीह की देह में साझेदारी और एकता के महत्व पर ज़ोर देती है। प्रेरितों के काम 1:8 में, यीशु ने अपने शिष्यों को निर्देश दिया, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

यह पद सुसमाचार के प्रगतिशील रूप से फैलने पर ज़ोर देता है, जो स्थानीय स्तरों पर शुरू होकर पृथ्वी के कोने-कोने तक पहुँचता है। हालाँकि, विश्वासियों का कोई भी अकेला समूह अकेले इस मिशन को पूरा नहीं कर सकता। आरंभिक कलीसिया मिशनरी नेटवर्क, आर्थिक सहयोग और साझा नेतृत्व पर निर्भर थी, जैसा कि प्रेरित पौलुस की सेवकाई में देखा गया, जिसने एशिया माइनर और यूरोप भर की कलीसियाओं के साथ साझेदारी की।

इसी तरह, I कुरिन्थियों 12:12–27 कलीसिया को एक देह के तौर पर बताता है जिसमें कई अंग हैं, और हर कोई एक अहम भूमिका निभाता है। यह सिद्धांत न सिर्फ़ स्थानीय मंडली में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी लागू होता है—हर कलीसिया, मिशनरी और विश्वासी का महान आदेश को पूरा करने में एक खास योगदान होता है।

आप पूछ सकते हैं कि वैश्विक साझेदारी क्यों ज़रूरी है। कलीसियाएं अलग-अलग संस्कृति, भाषा और भौगोलिक संदर्भ से होती हैं। कुछ कलीसियाएं आर्थिक रूप से मज़बूत होती हैं, जबकि दूसरों के पास मिशनरी जनशक्ति होती है या वे ऐसे देशों और संस्कृतियों में गहरी जड़ें जमा चुके होते हैं जहाँ अभी तक सुसमाचार नहीं सुना गया है। वे भाषा बोल सकते हैं और जिन लोगों तक पहुँचा जा रहा है, उन्हें बेहतर समझ सकते हैं। एक साथ साझेदारी करके, कलीसियाएं उन क्षेत्रों में अपना प्रभाव बढ़ा सकती हैं जहाँ तक पहुँच नहीं है, और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि हर देश, गोत्र और लोगों के समूह को बाइबिल के अनुसार उद्धार मिले।

उदाहरण के लिए, अफ्रीका में कोई पुर्तगाली बोलने वाला देश या शहर, जहाँ पहुँच नहीं है, वहाँ उत्तरी अमेरिकी कलीसिया शायद जल्दी न पहुँच पाए। लेकिन, ब्राज़ील की संयुक्त पिन्तेकुस्त कलीसिया , हमारे ग्लोबल कमीशन ऑफ़ मिशन्स, रीजनल कमीशन ऑफ़ मिशन्स और ब्राज़ील के मिशनरियों के ज़रिए, पुर्तगाली बोलने वाले मिशनरियों को पुर्तगाली बोलने वाली संसार में भेजने का दर्शन रखती है।

वैश्विक भागीदारी की चुनौतियाँ

हालांकि वैश्विक सहयोग ज़रूरी है, लेकिन इसमें चुनौतियाँ भी हैं। इनमें से कुछ हैं:

सांस्कृतिक अंतर	कलीसियाएं खास संस्कृति रूपरेखा में काम करती हैं, जिससे कभी-कभी गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं।
वित्तीय असमानताएँ	कुछ कलीसियाओं के पास बहुत सारे संसाधन होते हैं, जबकि दूसरे आर्थिक तंगी से जूझते हैं, जिससे निर्भरता की दिक्कतें हो सकती हैं।
सताव और सरकारी प्रतिबंध	कुछ देश विदेशी धार्मिक प्रभाव पर रोक लगाते हैं, जिससे साझेदारी मुश्किल हो जाती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, प्रेरिताई पिन्तेकुस्त को वैश्विक एकता के लिए समर्पित रहना चाहिए। इन बाधाओं को दूर करने के लिए विनम्रता, बातचीत और सुसमाचार फैलाने के साझा मिशन पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

मज़बूत वैश्विक संबंध बनाने के लिए, हम ये कर सकते हैं:

वैश्विक कलीसिया के लिए प्रार्थना करें	संसार भर में मिशनरियों, सेवकों, सताए गए विश्वासियों और कलीसिया के अगुवों के लिए नियमित तौर पर मध्यस्थता करें।
मिशनों को आर्थिक रूप से समर्थन दें	मिशन कार्यक्रम, बाइबल स्कूल और कलीसिया स्थापना के प्रयासों में निवेश करें।
विविध-संस्कृति (क्रॉस कल्चर) प्रशिक्षण में शामिल हों	बेहतर सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग संस्कृति के बारे में जानें।
मिशनरियों को भेजें और उनका समर्थन करें	लोगों को मिशन पूरा करने के लिए बढ़ावा दें और लगातार समर्थन दें।
संबंध के लिए तकनीकी का उपयोग करें	प्रशिक्षण, संगति और संसाधन साझा करने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (मंच) का उपयोग करें।

स्वदेशी अगुवों को प्रोत्साहित करना और उन्हें सक्षम (प्रशिक्षित) बनाना

सिर्फ़ विदेशी मिशनरियों पर निर्भर रहने के बजाय, वैश्विक साझेदारी स्वदेशी पसबानों, सुसमाचार प्रचारकों, कलीसिया संस्थापकों, क्षेत्रीय मिशनरियों और राष्ट्रीय कलीसियाओं द्वारा नियुक्त मिशनरियों को मज़बूत बनाने में मदद करती हैं। स्थानीय अगुवे बाहरी लोगों की तुलना में अपनी संस्कृति के संदर्भ को बेहतर समझते हैं और अपने लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने में ज़्यादा प्रभावशाली होते हैं।

वैश्विक साझेदारी, नेतृत्व सम्मेलनों (लीडरशिप डेवलपमेंट इंटरनैशनल), ग्लोबल चिल्ड्रन्स मिनिस्ट्रीज़, ग्लोबल स्टूडेंट एंड कैंपस मिनिस्ट्रीज़, और गेट्स (GATS) (ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ़

ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज
थियोलॉजिकल स्टडीज़) के ज़रिए राष्ट्रीय कलीसियाओं और स्थानीय पसबानों को सशक्त बनाने में मदद करती हैं।

गेट्स (GATS) का दर्शन हर देश में बाइबल स्कूल खोलना है, ताकि पुरुषों और स्त्रियों को सेवकाई में बेहतरीन प्रशिक्षण दिया जा सके।

छात्र एक देश की अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं और ऐसे सेवक बनते हैं जो अपने क्षेत्र में कलीसिया स्थापित कर सकें और अपनी दिल की भाषा का उपयोग करके नए विश्वासियों को शिष्य बना सकें। संसार के कई हिस्सों में, कलीसियाएं गरीबी, युद्ध, प्राकृतिक आपदाओं और सताव से प्रभावित क्षेत्रों में सेवकाई करती हैं। वैश्विक साझेदारी से मानवीय मदद, मेडिकल मिशन और सामुदायिक विकास परियोजनाओं को बढ़ावा मिलता है, जो सुसमाचार के लिए द्वार खोलते हैं। दया के काम मसीह के प्रेम को दिखाते हैं और हमें उद्धार का संदेश बांटने के मौके देते हैं।

उदाहरण के लिए, प्रेरिताई पिन्तेकुस्त कलीसियाओं ने भूकंप, तूफान और शरणार्थी संकट के समय खाना, रहने की जगह और मेडिकल सुविधा देकर मदद की है। दया के ये काम मसीह के प्रेम को दिखाते हैं और उद्धार का संदेश बांटने के मौके देते हैं।

प्रेरिताई संदेश को एकीकृत करना

ग्लोबल काउंसिल ऑफ यू पी सी आई जैसी संस्था के ज़रिए वैश्विक साझेदारी कलीसियाओं के बीच सिद्धांत की एकता, संगति और जवाबदेही को बढ़ावा देती है। यह हमें विश्वास में एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने और यह सुनिश्चित करने की इजाज़त देता है कि संदेश बाइबिल के अनुसार सही रहे।

हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला

हर दिन पेन्तिकुस्त और
महान आदेश पर एक नया दृष्टिकोण

विशेष नोट

इस पाठ का मूल शीर्षक "द टीचर एंड ए फ्रेश लुक एट द ग्रेट कमीशन" (शिक्षक और महान आदेश पर एक नया दृष्टिकोण" था, इसे संपादित किया गया है और इसे यहाँ हर दिन पेन्तिकुस्त श्रृंखला के हिस्से के तौर पर पेश किया गया है।

मुख्य पद

इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:19–20)।

परिचय

एक अमीर आदमी लंबी यात्रा पर जा रहा था। उसने अपने बैग में अपने सारे कीमती गहने और पैसे रखे थे। एक चोर दोस्त बनकर उसका पीछा करने लगा। वह असल में उस अमीर आदमी का पैसा चुराने के मौके का इंतज़ार कर रहा था।

चोर के इरादों को जानते हुए, अमीर आदमी ने एक योजना सोची । हर रात जब वह किसी स्थानीय होटल में रुकता, तो वह चोर को अपने साथ कमरा साझा करने के लिए बुलाता। अंदर जाने के बाद, अमीर आदमी कहता, "ये रहा तौलिया। तुम जाकर रात के लिए नहा लो।"

जब चोर नहा रहा होता था तो अमीर आदमी अपना खज़ाना छिपा देता। जब चोर नहा लेता, तो अमीर आदमी नहाता और चोर पागलों की तरह खज़ाने ढूंढता। उसने अमीर आदमी के सामान में देखा, अलमारी, दराज, बिस्तर के नीचे, गद्दों के बीच और अमीर आदमी के तकिये के नीचे भी ढूंढा। उसे खज़ाना नहीं मिला।

यात्रा के अंत में, अमीर आदमी घर जाने वाली ट्रेन (रेलगाड़ी) में चढ़ गया। उसने चोर को आवाज़ दी, "मुझे पता है तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे हो। तुम मेरा खज़ाना चुराने की कोशिश कर रहे हो। हर रात तुमने मेरे बैग देखे हैं, अलमारी में तलाशी ली है, और दराजों में भी ढूंढा है। तुमने मेरे बिस्तर के नीचे, गद्दों के बीच, और मेरे तकिये के नीचे भी देखा है। एक जगह जिसके बारे में तुमने कभी नहीं सोचा था कि तुम उसे देखोगे, वह तुम्हारे अपने तकिये के नीचे थी। खज़ाना तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा पास था!"

हम संजोते हैं:

1. कलीसिया की वृद्धि
2. बेदारी (जागृति)
3. आत्मिक परिपक्वता
4. वे खजाने हमारी सोच से कहीं ज़्यादा पास हैं। वे हमारे तुरंत उपयोग के लिए हमारे पास हैं।

रॉन लिब्बी ने हाल ही में अपने एक उपदेश में कहा:

- हम प्रचार के माध्यम से परमेश्वर के राज्य को बढ़ाते हैं।
- हम शिष्यत्व के माध्यम से परमेश्वर के राज्य को गहरा करते हैं।

बड़ा विचार

यीशु को, अपनी पृथ्वी की सेवकाई में, अक्सर गुरु (शिक्षक) कहकर बुलाया जाता था। सिखाना उसकी प्राथमिकताओं में से एक था। नीकुदेमुस ने कहा, "हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है" (यूहन्ना 3:2)। नीकुदेमुस की बात लगभग सही थी: यीशु *परमेश्वर था जो सिखाने आया था*। उसमें भूखे हृदयों को बदलने का पक्का इरादा था और वह किसी भी जगह को कक्षा बना सकता था।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि स्थानीय कलीसिया में सिखाने की सेवकाई खत्म होती जा रही है या उसे कम आंका जा रहा है, और बड़ी कलीसिया की तो बात ही छोड़ दें। बाइबिल की शिक्षा को नज़रअंदाज़ किया जा रहा है, अनदेखा किया जा रहा है, और कई बार तो उसे छोड़ दिया जाता है क्योंकि हर हफ़्ते कम सेवा होती हैं, छोटी सेवा होती हैं, और शक्तिशाली सेवा होती हैं।

जब मैं 45 साल पहले मसीही बना, तो सबसे पहले मुझे यह बात पता चली कि शिक्षा को उबाऊ माना जाता था। अगर कोई मेहमान प्रचारक हमारी कलीसिया में आता और उसे उबाऊ माना जाता, तो लोग कहते, "ओह, वह तो शिक्षक है।"

अच्छे उपदेशकों को "प्रचार मशीन," "आग के गोले," वगैरह कहा जाता है। मुझे हैरानी है कि अच्छे शिक्षकों को क्या कहा जाता है। कुछ शिक्षक भूल जाते हैं कि परमेश्वर का वचन सुसमाचार है। वे इस तरह सिखाते हैं कि वह न तो शुभ(अच्छा) होता है और न ही समाचार (खबर)।

शिक्षा ही, प्रेरिताई कलीसिया की बेदारी की सेवकाई है। शिक्षा के माध्यम से, पासबान झुंड को झूठी शिक्षाओं से बचाता है। शिक्षा झुंड को सच्चाई में मज़बूत करती है (और गहरा करती है) और आत्मिक उन्नति और परिपक्वता को बढ़ावा देती है। कुछ पवित्र शास्त्रों के वचन (दृष्टांत) इसे पक्का करते हैं:

> ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों। वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। (इफिसियों 4:14–15)

> क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है! परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है; दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है। (भजन 1:1–4)

> व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा। (यहोशू 1:8)

इसलिए, शिक्षा और आत्मिक परिपक्वता, धर्मशास्त्रीय शिक्षा की आत्मिक उन्नति के मुख्य मूल्यों का भाग हैं और हमारी स्थानीय कलीसिया में ये आधारभूत होने चाहिए।

सामना करो:

- देश बाइबल स्कूल इसलिए शुरू नहीं करते क्योंकि वे सिखाने और शिष्य बनाने की अहमियत नहीं समझते।
- कलीसिया में नए परिवर्तित लोगों के लिए कोर्स नहीं होते क्योंकि वे सिखाने और शिष्य बनाने की अहमियत नहीं समझते।
- कलीसियाओं में संडे स्कूल नहीं होते क्योंकि वे जन्म से लेकर मृत्यु तक सिखाने और शिष्य बनाने की अहमियत नहीं समझते।
- सदस्य बाइबल स्कूल नहीं आते क्योंकि वे सीखने की अहमियत नहीं समझते।
- पासबान परमेश्वर के बुलाए हुए छात्रों को बाइबल स्कूलों में नहीं भेजते क्योंकि वे सिखाने और शिष्य बनाने की अहमियत नहीं समझते।

कोई व्यक्ति प्रभु के इस वादे को भूल गया है, उसे नज़रअंदाज़ कर दिया है, छोड़ दिया है या अनदेखा कर दिया है: "और मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे दूंगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएंगे।" (यिर्मयाह 3:15)।

महान आदेश

महान आदेश दो कारणों से पवित्रशास्त्र के सबसे महत्वपूर्ण भागों में से एक है:

- इसे यीशु का अपने शिष्यों को दिया गया अंतिम व्यक्तिगत निर्देश माना जाता है। इसमें सभी अनुयायियों के लिए जाने के लिए आदेश शामिल हैं।
- यह यीशु मसीह की तरफ़ से अपने अनुयायियों के लिए एक खास बुलाहट है कि वे धरती पर रहते हुए खास, सोच-समझकर काम करें।

यूनाइटेड पेंटीकोस्टल चर्च इंटरनेशनल के वैश्विक मिशन प्रयासों में हमारे दर्शन का एक हिस्सा संदेशवाहकों को प्रशिक्षित करना और संदेश भेजना है। ये दोनों पहलू महान आदेश में मज़बूती से शामिल हैं और लोगों को परमेश्वर के वचन को प्रभावशाली तरीके से संभालने के लिए प्रशिक्षित करने की हमारी इच्छा को पूरा करते हैं।

मत्ती 28:19 में, जिसे हम महान आदेश के नाम से जानते हैं, हमें चार क्रियाएँ मिलती हैं:

- जाना
- शिष्य बनाओ (सिखाओ)
- बपतिस्मा देना
- सिखाना

क्या आपने कभी महान आदेश की मुख्य क्रिया (कुछ लोग कहते हैं कि यह इकलौती क्रिया है) पर ध्यान दिया है? यह अनिवार्य, महत्वपूर्ण, अति आवश्यक और बहुत ज़रूरी है। अंग्रेजी अनुवाद से हमारी जान-पहचान होने की वजह से, हम आमतौर पर मान लेते हैं कि मुख्य क्रिया *go (जाना)* है।

यूनानी, जो नया नियम की मूल भाषा है, उसमें अलग-अलग तरह की क्रियाएं होती हैं। यह जानने से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के बीच फर्क करने में मदद मिलती है। NKJV में मत्ती 28:19 की मुख्य यूनानी क्रिया है *मैथेट्यूओ* या *चेले बनाना*। KJV इस क्रिया को "सिखाना" (*डिडास्को*) कहता है। इस तरह, महान आदेश में मुख्य कार्य क्रिया सिखाने और चेले बनाने का आदेश है। यही महान आदेश का मूल है।

इसलिए, महान आदेश यह है:

शिष्य बनाओ
...जाकर
...बपतिस्मा देकर
...सिखाकर

महान आदेश कुछ इस तरह है:

शिष्यों,
शिष्य बनो
... जैसे तुम जा रहे हो
... जैसे तुम बपतिस्मा दे रहे हो
... जैसे तुम सिखा रहे हो

मत्ती 28:18–20 के आधार पर, हम शिष्य बनाने का यह सूत्र (फ़ॉर्मूला) निकाल सकते हैं:

जाना
+ बपतिस्मा (सुसमाचार प्रचार)
+ सिखाएँ (शिक्षित करें)
= शिष्य बनाओ (यीशु मसीह के परिपक्व अनुयायी)

ज़्यादातर उपदेशों में महान आदेश के शब्द ' *जाओ'* पर ज़ोर दिया जाता है, न कि *सिखाने* या *चेला बनाने पर* । ऐसा लगता है कि हम जिस चीज़ को महत्व देते हैं, वह है "जाना"। जाना ज़रूर ज़रूरी है। अगर सभी देशों तक पहुँचना है तो इसे शामिल करना होगा। लेकिन जाना महान आदेश का मुख्य मुद्दा (बात) नहीं है। यह पाठ "सारे जगत में जाने" को कम आंकने की कोशिश नहीं है। यह सिर्फ़ महान आदेश के नज़रअंदाज़ किए गए हिस्से को उजागर करना है। यह या तो/या वाला परिदृश्यनहीं है। दोनों ही किए जाने चाहिए।

यीशु ने हमें बताया कि क्या करना है (शिष्य बनाना) और कैसे करना है।

- जाना

- बपतिस्मा देना
- सिखाना

कोई भी हिस्सा दूसरों से ज़्यादा ज़रूरी नहीं है। चेले बनाने के आदेश को पूरा करने के लिए हर हिस्सा ज़रूरी है। "जाओ" इस आदेश की संचालक शक्ति है। बिना जाए चेले बनाने के आदेश को पूरा करना असंभव है। लेकिन चेले बनाए बिना जाना संभव है। कुछ लोग "महान धर्मयुद्ध" (क्रूसैड) की बात करते हैं। जब तक चेले नहीं बनाए जाते, धर्मयुद्ध को महान नहीं माना जा सकता।

यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं। (मत्ती 28:18–20)

यूनानी समाज में, शिष्य वह व्यक्ति होता था जो खुद को एक वरदानित (योग्य) गुरु के आगे समर्पित कर देता था। शिष्य वह होता है जो दूसरे की शिक्षाओं पर विश्वास करता है और उन्हें अपनाता है और जीवन बदलने की प्रक्रिया में शामिल होता है।

एक शिष्य एक छात्र होता है, लेकिन वह सिर्फ़ एक सीखने वाले से ज्यादा होता है । वह एक अनुशासित अनुयायी होता है। वह ऐसा होता है जो अपने गुरु की शिक्षाओं को मानने के लिए अपनी ज़िंदगी समर्पित कर देता है। यीशु ने कहा कि हमें उसके शिष्यों को सिखाना है कि वे उसकी हर आज्ञा का पालन करें (या मानें)। शिष्यत्व आज्ञा मानने से शुरू होता है (लूका 6:46; यूहन्ना 14:15, 23–24)। जॉर्ज बार्ना बताते हैं कि महान आदेश मुख्य रूप से सुसमाचार प्रचार के बारे में नहीं है, बल्कि शिष्यत्व के बारे में है। मुझे लगता है कि इसमें दोनों शामिल हैं। आपके पास एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता। हालाँकि, ज़ोर शिष्य बनाने पर है, जो सिखाने से सबसे अच्छा होता है।

ध्यान दें कि शिष्य दूसरे शिष्यों को प्रशिक्षण देकर खुद को दोहराते हैं। दूसरा तीमुथियुस 2:2 इस समझ के बहुत करीब है। वह आदेश एक लगातार चलने वाले चक्र को दिखाता है।

उन्हें उनको जीतना सिखाएं।	"तब मैं अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊंगा।" (भजन 51:13)। "अपुल्लोस आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उस की बातें सुनकर, उसे अपने यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक ठीक बताया।" (प्रेरितों 18:26)।
उन्हें उनको मानना सिखाएं।	"लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उस को चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।" (नीतिवचन 22:6)। "पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था और बालकपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है। हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए"(II तीमुथियुस 3:14–17)।
उन्हें उनको बनाना सिखाएं।	"नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:2)। "यदि तुम विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो " (कुलुस्सियों 1:23)। "और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है।" (प्रेरितों के काम 20:32, परमेश्वर का वचन)। "समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए ओर ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिये है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिये पक्के हो गए हैं" (इब्रानियों 5:12,14)।

	"इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।" (इफिसियों 2:19–21)। सिर्फ़ प्रचार पर बनी कलीसिया बहुत लंबी होती है लेकिन बहुत ऊँची नहीं होती । प्रचार और प्रशिक्षण पर बनी कलीसिया लंबी और ऊँची दोनों होती है। यह इतनी बड़ी बन जाती है कि संसार उसे जीत नहीं सकता। (इसे व्हाइटबोर्ड पर या ग्राफ़िक में दिखाएँ)।
उन्हें उनको भेजना सिखाएं।	"और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों" (II तीमुथियुस 2:2)।

निष्कर्ष

महान आदेश ने देशों को शिष्य बनाने के लिए कहा। यह सिर्फ़ धर्म बदलने के बारे में नहीं था, बल्कि शिष्य बनाने के बारे में था। इसलिए, हम सिर्फ़ सुसमाचार का प्रचार ही नहीं करते, बल्कि शिक्षा भी देते हैं।

जे.आई. पैकर ने अपनी किताब *'इवेंजिलिज़्म एंड द सॉवरेन्टी ऑफ गॉड* ' में कहा है कि एक प्रचारक अपनी सेवकाई को सबसे अच्छे तरीके से पूरा करने के लिए सिखाता है। उनका दावा है कि सुसमाचार सिखाना, उसे उसकी सबसे आसान ज़रूरी बातों तक छोटा करना और हर बिन्दु पर सोचना, प्रचारक की पहली ज़िम्मेदारी है।

> जब पौलुस ने औपचारिक या अनौपचारिक रूप से, आराधनालय में या सड़कों पर, यहूदियों या गैर-यहूदियों को, भीड़ को या किसी एक मनुष्य को सुसमाचार सुनाया, तो उसने जो किया वह था सिखाना—ध्यान खींचना, दिलचस्पी जगाना, तथ्य बताना, उनका महत्व समझाना, मुश्किलों को सुलझाना, आपत्तियों का जवाब देना, और यह दिखाना कि संदेश का जीवन पर क्या असर होता है।

> स्पष्ट है, पौलुस के दृष्टिकोण से, एक सुसमाचार के प्रचारक के तौर पर उसका पहला और ज़रूरी काम ज्ञान देना था—लोगों के मन में सुसमाचार को बिठाना। उसके लिए, सच सिखाना ही सुसमाचार प्रचार की बुनियादी गतिविधि थी; इसलिए, उसके लिए सुसमाचार प्रचार का एकमात्र सही तरीका सिखाने का तरीका था। (पैकर, 48–49)

सुसमाचार के हर सेवक में क्या सामान्य होना चाहिए? परमेश्वर का वचन सिखाने की योग्यता । खास तौर पर I तीमुथियुस 3:2 को देखें। ज़्यादातर अनुवाद या तो "सिखाने में योग्य " या "सिखाने में निपुण" कहते हैं। कुछ दूसरे कहते हैं कि एक सेवक में "सिखाने का वरदान " (वेमाउथ); "सिखाने में अच्छा" (वर्ल्ड इंग्लिश बाइबिल); "एक शिक्षक " (डूए-रीम्स बाइबिल); और "एक तैयार शिक्षक " (BBE) होना चाहिए। आप इसे किसी भी तरह से देखें, परमेश्वर आपको एक शिक्षक बनने के लिए बुला रहा है। आप किसका इंतज़ार कर रहे हैं? जाओ और सिखाओ!

हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

हर दिन शिष्य

मुख्य पद

और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।
(प्रेरितों 2:42–47)

परिचय

शिष्यता में लगातार कटनी (फसल) पाने की कोशिश करके, हम जानबूझकर शिष्यता की ऐसी संस्कृति बना सकते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए लंबे समय तक अच्छे परिणाम दे। लेकिन सबसे पहले हमें यह गहराई से समझना चाहिए कि "शिष्य" और "शिष्यत्व" शब्दों का वास्तविकता में क्या अर्थ है।

शिष्य को परिभाषित करना

बाइबिल के अनुसार, "शिष्य" शब्द का मतलब है सीखने वाला, अनुसरण करने वाला, या प्रशिक्षु जो शिष्य बनाने वाले से सीखने और उसकी नकल (अनुकरण) करने के लिए तैयार रहता है।

शिष्य के बारे में यीशु की परिभाषा सबसे अच्छे तरीके से निम्नलिखित वचन में बताई गई है: "तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उसकी प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना 8:31–32)।

एक शिष्य है:

- नियमित रूप से और उद्धेश्य के साथ यीशु से सीखना और मसीह जैसे बनना।
- एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी इच्छा को यीशु की इच्छा से जोड़ता है, और उसके बारे में और उससे सीखकर अपनी पहचान और उद्धेश्य खोजता है, क्योंकि वे उसके साथ एक ही मार्ग पर चलते हैं।
- केवल एक सीखने वाले या छात्र से कहीं ज़्यादा। एक शिष्य मूल्य जानता (गिनता) है और यीशु के पीछे चलने के लिए पूरी तरह से समर्पित होता है।
- कोई ऐसा व्यक्ति जो किसी दूसरे की शिक्षाओं को पूरी तरह से मानता हो। यीशु के अनुयायियों को "मसीही" कहलाने से पहले ही "शिष्य" कहा जाता था (प्रेरितों के काम 11:26)।
- एक सच्चा विश्वासी। नया नियम में मसीही होने को शिष्य होने के बराबर माना गया है। नया नियम में "मसीही" का ज़िक्र तीन बार आया है, और "शिष्य" का ज़िक्र 260 से ज़्यादा बार हुआ है। प्रेरितों की पुस्तक देखें। मसीहियों के बारे में बताने के लिए "शिष्य" सबसे आम शब्द था।
- अपने जीवन में आत्मिक नेतृत्व का अनुसरण करने वाले लोग ही नहीं, बल्कि कोई और भी उनका अनुसरण करता है। ' *फ़ॉलो टू लीड: द जर्नी ऑफ़ ए डिसाइपल मेकर' में* , स्टैन ग्लीसन कहते हैं कि शिष्य ही शिष्य बनाते हैं। आप इस प्रश्न का जवाब देकर जान सकते हैं कि आप शिष्य हैं या नहीं कि "आपका शिष्य कौन है?"

ए.डब्लू. टोज़र ने एक बार कहा था, "सच्चा शिष्यत्व यीशु मसीह की बात मानना, उससे सीखना, उसका अनुसरण करना और जो वह आपको करने के लिए कहता है, वही करना, उसकी आज्ञाओं का पालन करना और उसकी इच्छा पूरी करना है। इस तरह का व्यक्ति ही मसीही है—और कोई दूसरा प्रकार का नहीं।"

एक शिष्य के मूल लक्ष्य

अपनी मशहूर किताब *'प्रैक्टिसिंग द वे' में* जॉन मार्क कॉमर कहते हैं कि एक शिष्य के तीन मुख्य लक्ष्य होते हैं:

1. यीशु के साथ रहने के लिए,
2. उसके जैसा बनने के लिए, और
3. जैसा उसने किया वैसा ही करना।

यीशु ने कहा, "मेरे पीछे आओ" (मरकुस 1:17)। ये मानव इतिहास में कहे गए कुछ सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं।

"इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" (लूका 14:33).

"तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।" (मत्ती 16:24)।

बाइबिल के शिष्य की विशेषताएँ

यीशु का अनुसरण किया	उन्होंने शारीरिक और आत्मिक रूप से यीशु का अनुसरण करने के लिए अपने पुराने जीवनों को पीछे छोड़ दिया (मत्ती 4:18–22)।
यीशु से सीखा	यीशु की बात सुनी, प्रश्न पूछे (मरकुस 1:1–20)।
यीशु का अनुकरण किया	यीशु के उदाहरण, चरित्र और सेवकाई का अनुकरण करने का प्रयास किया (यूहन्ना 13:34–35)।
यीशु द्वारा रूपांतरित हुए	यीशु की शिक्षा और उसकी उपस्थिति से परिवर्तन आया। इससे उनके जीवन, मूल्यों और प्राथमिकताओं में बदलाव आया (रोमियों 12:1–2)।

"इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।और इस संसार के **सदृश न बनो**; परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी **बदलता जाए**, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:1–2, ज़ोर मेरा है)। क्या आपने रोमियों 12:2 में दो विकल्प देखे? एक व्यक्ति या तो सदृश बन जाता है या बदल जाता है। आप कौन हैं?

शिष्य होने को साबित करना और सुधारना

"मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे" (यूहन्ना 15:8)। बहुत फल लाकर कोई भी यीशु मसीह का अनुयायी और शिष्य साबित होता है। बहुत फल लाने का क्या मतलब है?

सबसे पहले, बहुत फल लाना और शिष्य साबित होना एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन दोनों प्रक्रियाओं को अलग नहीं किया जा सकता, इसलिए हम यहां उन पर एक साथ बात करेंगे। फल लाना एक सच्चे शिष्य की निशानी है और इसमें कई आत्मिक विशेषताएं और कार्य शामिल हैं।

"यीशु के स्वरूप में बनना एक लंबी, धीमी प्रक्रिया है, यह एक बार की घटना नहीं है। स्वर्ग से कोई बिजली नहीं गिरती। आत्मिक विकास शारीरिक विकास जैसा ही है—बहुत धीरे-धीरे। यह जीवन भर धीरे-धीरे और कभी-कभी अचानक होने वाली दर से होता है। हाँ, हम जन्म या किशोरावस्था में विकास की तेज़ी जैसे बड़े बदलावों का अनुभव करते हैं, लेकिन वे मुख्य मोड़ अपवाद हैं, नियम नहीं। जैसा कि रीजेंट कॉलेज के प्रोफेसर जेम्स ह्यूस्टन अक्सर कहते थे, 'आत्मिक विकास सभी मानवीय गतिविधियों में सबसे धीमा है'" (कॉमर, *प्रैक्टिसिंग द वे*, 73)।

हर दिन शिष्य में ये प्रयास शामिल हैं:

एक परिवर्तित हुआ जीवन जिएं	इफिसियों 4:22–24; रोमियों 12:1–2
आत्मा के फल प्रकट करें	गलातियों 5:22–23

मसीह की आज्ञाओं और उसके वचन का पालन करें	यूहन्ना 14:21, 23; फिलिप्पियों 2:12
दूसरों के लिए प्रेम दिखाएँ	यूहन्ना 13:34–35
दूसरों को परमेश्वर के पास आने में मदद करें	मत्ती 28:19–20
परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित करें	2 कुरिन्थियों 3:18
अंत तक विश्वासयोग्य बने रहें	मत्ती 10:22
फल लाएं	यूहन्ना 15:5–8
मसीह में बने रहें	यूहन्ना 8:31–32; 15:4–5
यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें	यूहन्ना 13:15; मत्ती 16:24
सेवा और त्याग का जीवन जिएं	रोमियों 12:1–2; 1 पतरस 2:21
शिष्य बनाएं	मत्ती 28:19–20
मसीह में छिप जाएं	कुलुस्सियों 3:3
यीशु मसीह द्वारा निर्मित हों	कुलुस्सियों 3:1–4
गुरु की तरह बनों	लूका 6:40
यीशु के प्रति समर्पण करें	लूका 14:26–27; 9:23–24
एक भक्तिपूर्ण, समर्पित जीवन जिएं	रोमियों 12:1; लैव्यव्यवस्था 20:7
आत्मा में चलें	गलातियों 5:16, 24
वचन में बने रहें	यूहन्ना 8:31–32; प्रेरितों के काम 2:42–47
पवित्र, धर्मी जीवनशैली जिएं	II तीमुथियुस 3:12; I पतरस 1:14–16
यीशु के साथ जुए में जुड़ना और उससे सीखना	मत्ती 11:28–30
दूसरों की सेवा करें	यूहन्ना 13:15
सत्य को साझा करें	II तीमुथियुस 2:1–2
मसीह में पूर्ण बनें	कुलुस्सियों 1:28–29
दृढ़ और साहसी बनें	यहोशू 1:5–7, 9
यीशु पर भरोसा रखें	यूहन्ना 14:1; नीतिवचन 3:5–6
शरीर के कामों को त्याग दें	गलातियों 5:19–21; इब्रानियों 3:12–14
अपने विश्वास और आत्मिक अभ्यास या अनुशासन के प्रति अटूट समर्पण	लूका 9:23, 62; 14:27

धीरज रखे, कठिनाईयों, मुश्किलों और परीक्षाओं को सहते हुए, बिना हार माने	रोमियों 5:3–4; याकूब 1:2–4; 1 कुरिन्थियों 9:24; 10:13; इब्रानियों 12:1–2; यशायाह 40:31; लूका 18:1–8; 2 थिस्सलुनीकियों 2:15
विचलित होने या बहकने से मना करें	1 कुरिन्थियों 7:35; लूका 21:34–36;
परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता और भक्ति में सच्चे रहें	1 कुरिन्थियों 4:2; 9:27; नीतिवचन 20:6
सारे हथियार से लैस हो जाओ; सब कुछ करके खड़े हो जाएं	इफिसियों 6:13–18; नीतिवचन 28:1; 1 पतरस 5:8–9
हर विचार को बंदी बनाएं	II कुरिन्थियों 10:5; फिलिप्पियों 4:8–9; कुलुस्सियों 3:2
विश्वास की लड़ाई लड़ें	1 तीमुथियुस 6:12; 2 तीमुथियुस 4:7; इब्रानियों 12:1
आत्मिक युद्ध में शामिल हों	इफिसियों 6:11–18; II कुरिन्थियों 10:4–5; मत्ती 16:18–19; यूहन्ना 10:10; लूका 10:17-20

टिकाऊ (बनी रहनेवाली) फसल और एक शिष्य

शिष्य बनाने के संदर्भ में, टिकाऊ फ़सल, इरादतन शिष्य बनाने की कोशिशों के लंबे समय तक चलने वाले फ़ायदेमंद नतीजों को बताने के लिए एक मज़बूत मिसाल हो सकती है। शिष्य बनाने में टिकाऊ फ़सल का क्या अर्थ हो सकता है, इसका ब्यौरा यहाँ दिया गया है:

टिकाऊ	इसका मतलब है कि शिष्य बनाने की प्रक्रिया को लगातार चलने वाली, आत्मनिर्भर और बदलते हालात के हिसाब से ढलने वाली बनाया गया है। यह कोई एक बार की घटना (कार्यक्रम) या अल्पावधि (शॉर्ट-टर्म) कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह आगे बढ़ने और विकास की एक लगातार चलने वाली यात्रा है।

	टिकाऊ का मतलब है खत्म होने या हमेशा के लिए खराब होने से बचाना। जब टिकाऊ शिष्यत्व की बात आती है, तो इसका मतलब सिर्फ़ लोगों को कलीसिया में लाना नहीं है, बल्कि एक बार जब वे कलीसिया में आ जाएं तो उन्हें कलीसिया में बनाए रखना है।
फसल	यह शिष्य बनाने के प्रयासों के फलवंत परिणाम दिखाता है, जहाँ लोग सुसमाचार से बदलते हैं और परिपक्व बनते हैं, और यीशु के शिष्य बनते हैं। फ़सल सिर्फ़ गिनती में बढ़ोतरी के बारे में नहीं है, बल्कि शिष्यों की गुणवत्ता के बारे में है—उनका चरित्र, विश्वास और आज्ञाकारिता ।

असल में, शिष्यता में एक टिकाऊ फ़सल कुछ ऐसी दिख सकती है:

1. शिष्य बनाने का एक प्रक्रिया जिसे इरादतन दोबारा उत्पन्न करने (बनाने) के लिए तैयार (डिज़ाइन) किया गया है, जिसमें हर नया शिष्य दूसरों को शिष्य बनाने के लिए तैयार होता है।
2. अल्पावधि (शॉर्ट-टर्म) कार्यक्रम या घटना के बजाय लंबे समय के (लॉन्ग-टर्म) रिश्तों और मार्गदर्शन (मेंटरशिप) पर केंद्रित।
3. आत्मिक विकास, चरित्र विकास और परमेश्वर के वचन का पालन करने पर ज़ोर।
4. लगातार सीखने, आगे बढ़ने और मूल्यांकन के लिए समर्पण, साथ ही शिष्यत्व की रणनीति को अपनाने और बेहतर बनाने की इच्छा।
5. शिष्यता के फल का उत्सव, जिसमें जीवनों में बदलाव, विश्वास समुदायों की वृद्धि और परमेश्वर के राज्य का विस्तार शामिल है।

शिष्यता में लगातार फ़सल काटने की कोशिश करके, कलीसिया और सेवकाई के अगुवे इरादतन शिष्यता की ऐसी संस्कृति बना सकते हैं जिससे परमेश्वर के राज्य के लिए लंबे समय तक चलने वाले, अच्छे परिणाम मिलें। ऐसा अनुमान है कि शुरुआती कलीसिया में 80 प्रतिशत से ज़्यादा सुसमाचार प्रचार आम मसीहियों ने किया था।

वर्षों की पासबानी और नेतृत्व के अनुभव का उपयोग करते हुए, स्टेन ओ. ग्लीसन बताते हैं कि संसार तक पहुंचने के अपने गंतव्य (लक्ष्य) को पूरा करने के लिए, कलीसिया को शिष्य बनाने की जीवनशैली जीनी चाहिए। (ग्लीसन, *फ़ॉलो टू लीड , 19)।* अपराध-बोध और व्यक्तिवाद का पश्चिम का लेंस शिष्य बनाने की इस बाइबिल पद्धति का विरोध करता है। ग्लीसन बाद के अध्यायों में इस

अवधारणा पर विस्तार से बताते हैं, और जोर देते हैं कि बाइबिल की शिष्यता की एक सच्ची जीवनशैली यीशु के जीवन के अनुसार होनी चाहिए, न कि बड़ी भीड़ इकट्ठा करने के लिए बल्कि दैनिक व्यक्तिगत संबंधों के माध्यम से कुछ लोगों तक पहुंचकर एक पीढ़ी को प्रभावित करने के लिए। अमेरिकी सपने में व्यक्तिगत सफलता हासिल करने के लिए मानक और सांस्कृतिक नियमों को प्राथमिकता देने से सफल शिष्य बनाने के लिए आवश्यक इरादतन दैनिक निकटता का निर्माण करने के लिए बहुत कम समय बचता है। सांस्कृतिक भूमिका चाहे जो भी हो, अब्राम की तरह आज्ञाकारी विश्वास के साथ आगे बढ़ना, परमेश्वर की बुलाहट का पालन करने के लिए, फिर भी पारिवारिक और सांस्कृतिक तनाव पैदा करता है और उद्धार और आत्मिक प्रतिफल के लिए सब कुछ जोखिम में डालना पड़ता है (एमिली मिन्चे, "अब्राहम का आज्ञाकारी विश्वास: आज की कलीसिया के लिए")।

निष्कर्ष

एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और पूरी तरह से समर्पित शिष्य किसी भी शत्रुतापूर्ण विदेशी संस्कृति में उस संस्कृति के आगे झुके बिना रह सकता है क्योंकि उसका मन दूसरे संसार पर लगा होता है। एक पश्चिम अफ्रीकी कोरस कहता है, "मेरे सामने एक और संसार है। मेरा उद्धारकर्ता मेरे लिए एक जगह तैयार करने गया है। मेरे सामने एक और संसार है।" हमें राज्य मानसिकता और स्वर्गीय मानसिकता वाला होना चाहिए।

डेविड वॉटसन ने एक बार कहा था, "अगर हम असली शिष्यता का मतलब जानने और सच में शिष्य बनने को तैयार हों, तो पश्चिम में कलीसिया बदल जाएगी और समाज पर इसका असर ज़बरदस्त होगा।" जो बात पश्चिम के बारे में सच है, वही संसार के कई दूसरे हिस्सों के बारे में भी सच है।

स्टेन ओ. ग्लीसन ने समझाया कि संसार तक पहुँचने की अपनी मंज़िल को पूरा करने के लिए, कलीसिया को शिष्य बनाने की जीवनशैली अपनानी चाहिए। वह जीवनशैली यीशु के जीवन पर आधारित है, बड़ी भीड़ इकट्ठा करने के लिए नहीं, बल्कि प्रतिदिन के व्यक्तिगत संबंधों के ज़रिए कुछ लोगों तक पहुँचकर एक पीढ़ी को प्रभावित करने के लिए। व्यक्तिगत सफलता पाने के लिए मानकीय और सांस्कृतिक नियमों को प्राथमिकता देने से सफल शिष्य बनाने के लिए ज़रूरी रोज़ाना की करीबी बनाने के लिए बहुत कम समय बचता है। इस तरह, पश्चिम का अपराध-बोध और व्यक्तिवाद का दृष्टिकोण शिष्य बनाने के इस बाइबिल के तरीके का विरोध करता है। सम्मान-शर्म और समूहवाद की पूर्वी संस्कृति

अक्सर लोगों को विरासत में मिली धार्मिक परंपराओं से अलग होने से रोकती है, इस डर से कि इससे उनके परिवार और समुदाय पर शर्म आएगी। सांस्कृतिक भूमिका चाहे जो भी हो, अब्राम की तरह आज्ञाकारी विश्वास के साथ आगे बढ़ना, परमेश्वर की बुलाहट का पालन करने के लिए अभी भी पारिवारिक और सांस्कृतिक तनाव पैदा करता है और उद्धार और आत्मिक प्रतिफल के लिए सब कुछ जोखिम में डालना पड़ता है।

आइए इस पाठ को एक आसान सी प्रार्थना के साथ खत्म करें। "प्रभु यीशु, वैश्विक शिष्यों के रूप में, हमें दूसरों को सलाह देकर और शिष्य बनाकर खुद को बढ़ाने में मदद करें। हम हमेशा आपके प्रेम को अपनाएं और आपके वचन के अनुसार चलें। हम पवित्र आत्मा की सामर्थ में आगे बढ़ने पाए। हमारे जीवन आपके अनुग्रह, तरस और सत्य को दिखाए। हमें संसार भर के समुदायों को बदलने के लिए आपके साथ साझीदार बनने में मदद करें। हम आपकी आज्ञा मानकर, दीनता और आप पर निर्भर रहते हुए साथ चलें, और हर दिन सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाएं। यीशु के नाम से !"

हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव

मुख्य पद

यहोवा ने उससे कहा, "तेरे हाथ में वह क्या है?" (निर्गमन 4:2)

धन्य है यहोवा, जो मेरी चट्टान है, वह मेरे हाथों को लड़ने,
और युद्ध करने के लिये तैयार करता है। (भजन संहिता 144:1)

पाठ का इच्छित उपयोग/उद्देश्य

यह पाठ (गेट्स) GATS (ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ़ थियोलॉजिकल स्टडीज) हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला का हिस्सा है, जिसे ग्लोबल मिशन्स, UPCI, इसके दर्शन और मिशन के साथ मिलकर बनाया गया है। इसे नीचे दिए गए तरीकों से इस्तेमाल करने के लिए बनाया गया है, लेकिन यह सिर्फ़ इन्हीं तक सीमित नहीं है। जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ उद्देश्य शामिल किए गए हैं:

→**गेट्स (GATS) शिक्षक दल विकास कार्यक्रम** - शिक्षक दल को डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव की समझ दें। खास विषय (कॉन्सेप्ट) को समझने, सबसे अच्छे तरीकों पर चर्चा करने और डिजिटल योजना बनाने से, बाइबल स्कूलों के शिक्षक दल और प्रशासन अपने सिखाने, शोध करने, प्रशासन, पदोन्नति और सेवा में डिजिटल तकनीक को अच्छे से इस्तेमाल करने में योग्य होंगे।

→**गेट्स (GATS) स्नातक कार्यक्रम -** इस पाठ और अलग-अलग कहानियों और अभ्यासों को "हर दिन पिन्तेकुस्त अध्ययन /श्रृंखला " नाम के एक चुनिंदा पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। यह एक चौबीस घंटे की कक्षा वाले प्रारूप के पाठ्यक्रम का हिस्सा होगा। इस पाठ को

बाइबल स्कूल सुसमाचार प्रचार के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जा सकता है, लेकिन हम इस उच्च स्तर के विस्तृत पाठ और सामग्री से बने एक छोटे, आसान पाठ का इस्तेमाल करेंगे।

→**नेतृत्व विकास -** यह पाठ और कार्यशाला पासबानों और कलीसिया के अगुवों को डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को अपनी सेवकाई अभ्यासों में अच्छे से जोड़ने के लिए ज्ञान, कौशल और रणनीति से तैयार करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। खास कॉन्सेप्ट्स (विषय) की छानबीन करके, सबसे अच्छे अभ्यासों पर चर्चा करके और एक डिजिटल सेवकाई योजना बनाकर, सहभागी डिजिटल उपकरणों और डिजिटल मंचों पर इस्तेमाल करने के लिए नेतृत्व संसाधनों को विकसित कर सकते हैं।

→**वैश्विक कैंपस (परिसर) और छात्र सेवकाई -** हाई स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों और छात्र सेवकाई को ज्ञान, कौशल और रणनीति से लैस करें ताकि वे अपने कैंपस सेवकाई अभ्यास में डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को अच्छे से एकीकृत कर सकें।

→**नया करे (RENEW)** (स्कूल ऑफ़ मिशन्स)- मिशनरियों और प्रतिनिधियों को ज्ञान, कौशल और रणनीति से लैस करें ताकि वे अपनी सेवकाई में डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को अच्छे से जोड़ सकें। ऐसे डिजिटल जुड़ाव और सुसमाचार प्रचार के विचारों (सुझावों) को जल्दी से बनाएं और उन्हें प्राथमिकता दें जो किसी खास देश या क्षेत्र में सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और व्यवहार्य हों।

→**UPCI के वैश्विक और क्षेत्रीय मिशनरी** - ऊपर नया करे (RENEW) में जो शामिल है, वैसा ही।

→UPCI के **वैश्विक समिति** (सदस्यों) और **कार्यकारिणी वैश्विक समिति** (प्रतिनिधियों) – से आशा है कि यह पाठ्य सामग्री इन समितियों के सदस्यों और प्रतिनिधियों और उनके प्रतिनिधियों (सदस्यों) के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा।

→**क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय सम्मेलनों, प्रथम स्तरीय नेतृत्व, क्षेत्रीय समन्वयक, और राष्ट्रीय बोर्ड -** क्षेत्रीय, सब-क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय नेतृत्व को कलीसिया के मिशन को आगे बढ़ाने में डिजिटल तकनीक की भूमिका को समझने में मदद करना, और प्रभावशाली डिजिटल

सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए रणनीति बनाना। खास सिद्धांतों, रणनीतियों और साझेदारियों पर विचार करके, अलग-अलग बोर्ड और अगुवे कलीसिया की डिजिटल सेवकाई के प्रयासों के लिए दर्शन और दिशा दे सकते हैं।

→**अल्पावधि (शॉर्ट-टर्म) मिशन-** पाठ्य सामग्री को छोटा किया जा सकता है और हमारे अलग-अलग अल्पावधि (शॉर्ट-टर्म) मिशन (STM) कार्यक्रम में पढ़ाने और चर्चा के लिए बदला जा सकता है, लेकिन ये इन्हीं तक सीमित नहीं हैं इनमें अगले चरण के कार्यक्रम, अपोस्टेलो, रॉबर्ट के. रोदिन नबुश ग्लोबल ट्रेनिंग सेंटर, ग्लोबल/रिजनल ट्रेनिंग प्रोग्राम और मिशनरी गेटवे सेंटर शामिल हैं।

→**उत्तरी अमेरिकी मिशन्स -** हम उत्तरी अमेरिकी मिशन्स और अलग-अलग जिलों और स्थानीय कलीसियाओं के साथ मिलकर काम करने के लिए बहुत आभारी हैं, ताकि विश्व भर में दस लाख शिष्यों के दर्शन को हासिल किया जा सके और उसे बनाए रखा जा सके। हमारी इच्छा है कि इस पाठ और सामग्री को उनके इस्तेमाल के लिए भी बदला जा सके।

परिचय

आरंभिक कलीसिया में, रोमी सड़क व्यवस्था ने सुसमाचार के लिए एक रणनीतिक राजमार्ग का काम किया। यह बड़ा नेटवर्क—जो 250,000 मील तक फैला था—पौलुस और दूसरे मिशनरियों के लिए सुरक्षित रास्ता बनाता था, जिससे उद्धार के सुसमाचार का प्रसार आसान हुआ (रोमियों 10:15)। सड़कें कलीसियाओं को जोड़ती थीं, चिट्ठी-पत्री ले जाती थीं, और मसीही समुदायों को आगे बढ़ाती थीं। उन्होंने मसीह के प्रचार का रास्ता बनाया, सुसमाचार को एक शहर से दूसरे शहर और एक आत्मा से दूसरी आत्मा तक पहुँचाया। जैसे बाद में प्रिंटिंग प्रेस ने बाइबिल की पहुँच को बढ़ाया, वैसे ही इन सड़कों ने परिचित संसार में उद्धार (छुटकारे) के संदेश को तेज़ कर दिया।

प्रिंटिंग प्रेस ने एक ऐसा बदलाव किया जिससे लोगों को ज्ञान मिला। इससे पढ़ने-लिखने की क्षमता बढ़ी, जिससे आम लोग ऐसी चीज़ें पढ़ पा रहे थे जो पहले सिर्फ़ अमीर लोगों तक ही सीमित थीं। इसने पढ़ने-लिखने में क्रांति ला दी, सोचने-समझने का तरीका बदल दिया और वास्तविकता को नई परिभाषा दी। सबसे ज़रूरी बात, इसने पवित्रशास्त्र को आसान बनाया, जिससे परमेश्वर के वचन का प्रसार

तेज़ हुआ (भजन 119:105)। इसके आविष्कार से पहले, किताबें कम थीं, ज्ञान दबा हुआ था, और आत्मिक विकास धीमा था। प्रिंटिंग ने जानकारी के आदान –प्रदान को बढ़ावा दिया, दिमागों को मज़बूत बनाया और हृदयों को तैयार किया। सत्य से जुड़ने की क्षमता अब कोई खास अधिकार नहीं थी; यह सभी के लिए एक संभावना थी।

आज, हमारे समय की रोमी सड़के डिजिटल हैं: इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया (दूसरे मीडिया मंचों के साथ)। 2025 में 535 करोड़ (5.35 बिलियन) से ज़्यादा इंटरनेट उपयोगकर्ता के साथ, ऑनलाइन जुड़ाव सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व का एक ऐसा मौका है जो पहले कभी नहीं हुआ (मरकुस 16:15)। किसी ने इन डिजिटल राजमार्गों (हाईवे) के लिए कीमत चुकाई है—अब, विश्वासियों को सत्य के साथ इन पर चलना होगा। हालांकि मिशन बदला नहीं है, तरीके कई गुना बढ़ गए हैं। क्या हम इन नए रास्तों पर चलेंगे और हर स्क्रीन और आत्मा तक सुसमाचार पहुँचाएँगे?

डिजिटल प्रचार के लिए बाइबिल का आधार या समर्थन, शिक्षा और सहभागिता

डिजिटल सुसमाचार प्रचार और जुड़ाव धर्मशास्त्र के साथ, पहला तार्किक कदम यह पता लगाना है कि डिजिटल जुड़ाव और सुसमाचार प्रचार का इस्तेमाल करने के लिए पवित्रशास्त्र में क्या नींव, आधार या समर्थन है। हम इसे यीशु की बातों (वचनों) में पाते हैं:

1. " तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो" (मरकुस 16:15)। महान आदेश को पूरा करने के लिए, डिजिटल मंच हमें अपने वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने में मदद कर सकते हैं।

2. "तुम क्या समझते हो यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक जाए, तो क्या निन्यानबे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा?" (मत्ती 18:12)। निन्यानबे को छोड़ो और एक खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ो। डिजिटल सुसमाचार प्रचार और जुड़ाव हमें उन खोए हुए लोगों तक पहुँचने में मदद कर सकते हैं जिन तक पारंपरिक तरीकों से नहीं पहुँचा जा सकता।

3. “पके खेत तो बहुत हैं, पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे” (मत्ती 9:37–38)। डिजिटल सुसमाचार प्रचार बड़ी कटनी के लिए ज़्यादा मज़दूरों को उत्साहित और इकट्ठा कर सकता है।

4. “तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें” (मत्ती 5:14–16)। डिजिटल मंच हमें ज़्यादा लोगों तक अपनी ज्योति और परमेश्वर के वचन को पहुँचाने में मदद कर सकते हैं। (फिलिप्पियों 2:14–16 भी देखें)।

“मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं। और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं।” (I कुरिन्थियों 9:22b–23)। हम हर संभव तरीके का इस्तेमाल करके सुसमाचार फैलाते हैं।

“प्रभु आज्ञा देता है, तब शुभ समाचार सुनाने वालियों की बड़ी सेना हो जाती है।” (भजन संहिता 68:11)। “देश देश में उसके कामों का प्रचार करो.....उसके सब आश्चर्य-कर्मों का ध्यान करो।” (I इतिहास 16:8–9; भजन संहिता 96:2–3)।

“तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा।” (प्रेरितों 13:49)।

"परन्तु मैं कहता हूं, क्या उन्होंने नहीं सुना? सुना तो सही क्योंकि लिखा है कि उन के स्वर सारी पृथ्वी पर, और उन के वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं।" (रोमियों 10:18)।

इंटरनेट ने हमारे बातचीत करने के तरीके में बड़ा बदलाव किया है। “इंटरनेट ने हमारे जानकारी लेने और संसार से बातचीत करने के तरीके को बदल दिया है, और यह पहले से कहीं ज़्यादा आसान हो गया है” (एंड्रयू फेंग और निक वू, “डिजिटल स्ट्रैटेजीज़ फ़ॉर कोलैबोरेशन” ई एम क्यू : मिशन्स टेक में, जुलाई-सितंबर 2023, वॉल्यूम 59 #03)। हमारे संसार का एक बड़ा हिस्सा ऑनलाइन है। यहां तक कि उन क्षेत्रों में भी जहां स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुंच अभी सीमित और कम है, हालात तेजी से बदलते हैं, और तरक्की तेज़ी से हो सकती है।

दूरस्थ शिक्षा या सेल फ़ोन का इस्तेमाल करके शिक्षा लेने की पहल के बारे में, एक क्षेत्रीय शिक्षा प्रतिनिधि ने बताया कि अगर ऐसी शिक्षा लागू की गई, तो उनके देश में बहुत कम पासबान ऑनलाइन बाइबल शिक्षा और डिजिटल उपकरणों का फ़ायदा उठा पाएंगे क्योंकि बहुत कम लोगों के पास सेल फ़ोन थे। कुछ साल बाद, उसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि ने बताया कि अगर ऐसी शिक्षा की संभावना लागू की गई, तो उनके ज़्यादातर पासबान इसका फ़ायदा उठा सकते हैं। क्या हुआ? डिजिटल और तकनीकी विकास सचमुच साइबर-स्पीड (बहुत तेजी) से आगे बढ़ा है।

महामारी और महामारी के बाद की सेवकाई

डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के मामले में हम कोविड -19 महामारी से क्या सीख सकते हैं?

कोविड -19 महामारी ने कलीसिया की ऑनलाइन उपस्थिति में बड़ा बदलाव किया और उसे बेहतर बनाया, जिससे कई कलीसियाओं को आराधना, सुसमाचार प्रचार और जनसम्पर्क के लिए ऑनलाइन मंचों को जल्दी से अपनाना पड़ा।

एक साथ इकट्ठा होने पर रोक लगने के कारण, कलीसियाओं ने अपने सदस्यों से जुड़ने और नए लोगों तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया, लाइव स्ट्रीमिंग और ऑनलाइन कम्युनिटी (समुदाय) का सहारा लिया। इससे ऑनलाइन जुड़ाव बढ़ा, और कई कलीसियाओं ने एक साथ इकट्ठा होने की तुलना में ऑनलाइन ज़्यादा उपस्थिति और सहभागिता होने की रिपोर्ट दी।

महामारी की वजह से आभासी (वर्चुअल) प्रार्थना सभाएँ, ऑनलाइन छोटे समूह और सोशल मीडिया पर आधारित बाइबल अध्ययन शुरू हुए। इन नए तरीकों से कलीसियाओं को अपने सदस्यों से जुड़े रहने और नए लोगों तक पहुँचने में मदद मिली। इनसे कलीसियाओं को ज़्यादा लोगों तक पहुँचने और अपनी पहुँच बढ़ाने में मदद मिली। वे उन लोगों तक पहुँच सके जो व्यक्तिगत रूप से, आने-जाने की जगह और दूसरी कमियों की वजह से खुद नहीं आ पाते थे। शिष्य बनाने के लिए डिजिटल उपकरण और संसाधन बनाए गए, जिनमें ऑनलाइन बाइबल अध्ययन और भक्ति कार्यक्रम शामिल थे। कलीसियाओं ने सुसमाचार बाँटने और अपने लोगों की सेवा करने के लिए ऑनलाइन मंच का इस्तेमाल किया।

महामारी के बाद से डिजिटल और ऑनलाइन जुड़ाव कम हुआ है, लेकिन कुछ मायनों में यह बना रहेगा। जैसे-जैसे संसार महामारी की पाबंदियों से हटकर एक साथ इकट्ठा होने की सेवकाई को

प्राथमिकता दे रहा है, हम अपनी ऑनलाइन उपस्थिति को बढ़ाना जारी रख सकते हैं। आगे भी ज़रूरी तरीकों, मंचों और सिद्धांतों को बचाकर रखा जा सकता है और उन्हें बनाए रखा जा सकता है। हम ऑनलाइन मंचों का इस्तेमाल करके संसार भर के ज़्यादा लोगों तक और उन लोगों तक पहुँच सकते हैं जिनके पास एक साथ इकट्ठा होने की सेवकाई तक तुरंत पहुँच नहीं है। हमें ऑनलाइन और ऑफलाइन बातचीत और सेवकाई का सबसे अच्छा मिश्रण करने की कोशिश करनी चाहिए।

डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव

में शामिल लेखकों के शोध और उद्धरण

द स्टेट ऑफ़ डिजिटल तकनीक ज़ फ़ॉर द ग्रेट कमीशन के मुख्य संपादक एंड्रयू फेंग ने कहा, "यह मसीह और मिशन संस्थाओं के अनुयायियों के लिए रचनात्मक समय है। महान आदेश को पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ी से आगे बढ़ाना संभव है" (3)।

डिजिटल संसार में सुसमाचार साझा करने और लोगों को शिष्यत्व में शामिल करने के कई मौके मिलते हैं। बहुत से लोग आत्मिक रूप से भूखे हैं और परमेश्वर को खोज रहे हैं। उदाहरण के लिए, "परमेश्वर" का उल्लेख करने वाले पेज के लिए एक सिंपल वेब सर्च से 410,000 रिज़ल्ट मिलते हैं, जबकि "मसीह" सर्च करने पर लगभग 146,000 रिज़ल्ट मिलते हैं (फेंग, 6)।

जनवरी 2022 तक, संसार की 62.5 प्रतिशत आबादी इंटरनेट का इस्तेमाल करती है, और यह संख्या रोज़ाना लगभग 600,000 नए उपभोक्ताओं (उपयोगकर्ता) से बढ़ रही है। इस तेज़ी से बढ़ोतरी का असर बहुत ज़्यादा हो सकता है, खासकर संसार के उन लोगों पर जिन तक इंटरनेट नहीं पहुँचा है।

ऑनलाइन इस्तेमाल होने वाली सबसे आम भाषाओं में अंग्रेजी, चाइनीज़, स्पैनिश, अरबी, पुर्तगाली, इंडोनेशियन, फ्रेंच और दूसरी भाषाएँ शामिल हैं। अलग-अलग तरह के लोगों से अच्छे से बातचीत करने और जुड़ने के लिए, अलग-अलग लोगों के समूह द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक पर नज़र रखना और सुसमाचार प्रचार और आत्मिक प्रशिक्षण के लिए सबसे सही तरीके तय करना बहुत ज़रूरी है।

जैसा कि बताया गया है, "एक ही तकनीक हर किसी के लिए काम नहीं करेगी; हर तकनीक , भाषा और लोगों के समूह के लिए एक प्रासंगिक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण की ज़रूरत होती है।"

"डिजिटल प्रचार से डिजिटल शिष्यत्व को बढ़ावा मिल सकता है जिसमें गहरे संबंधों के लिए ऑडियो और वीडियो कॉल शामिल हो सकते हैं... नवाचार और सहयोग से संचालित प्रौद्योगिकी, मिशन के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है" (फेंग, 12–13)।

"यहोवा ने उससे कहा, "तेरे हाथ में वह क्या है?" वह बोला, "लाठी।" (निर्गमन 4:2–5)। "मूसा के हाथ में चरवाहे की लाठी थी; हमारे हाथ में स्मार्टफोन या कंप्यूटर कीबोर्ड है। हमारी स्क्रीन के टच या एक बटन के क्लिक से, संसार हमारे लिए पहुँचने योग्य है। हम इन उपकरणों का क्या करेंगे जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं?" ("The Opportunity of Digital Engagement in Modern Missions," Upstreamcollective.org)। नई मीडिया तकनीक की खासियतों में संवाद, सहयोग, मिलन, रचनात्मकता और समुदाय शामिल हैं ("The Mediatating Role of New Media Engagement in this Digital Age," frontiersin.org/journals)।

डिजिटल मिशनरी *: अपने कीबोर्ड को छोड़े बिना महान आदेश को पूरा करें*, में (*Digital Missionary: Fulfill the Great Commission without Leaving Your Keyboard)*, एंथनी एफ. रुस्सो ने लिखा, "आइए हम आज उपलब्ध तकनीक का पूरा उपयोग करें, इस शक्ति का उपयोग मसीह और उसकी सभी महिमामय उत्कृष्टता का प्रचार करने के लिए करें - उन्हें जोर से और स्पष्ट रूप से घोषित करें जैसे हम इंटरनेट युग के नगर प्रचारक हैं! - ताकि हम इस संसार को परमेश्वर से जोड़ सकें और वह काम कर सकें जो हमेशा रहेगा: मसीह के लिए प्रकाशन के माध्यम से जीवन को स्पर्श करें" (62)।

"डिजिटल संसार भी छोटा होता जा रहा है। हर दिन, संसार के ज़्यादा दूर-दराज के हिस्सों में इंटरनेट की पहुँच मिल रही है, जहाँ पहले यह नहीं था" (रूसो, 99)।

शेयरिंग जीसस ऑनलाइन: हेल्पिंग एवेरी डे बिलीवर्स बिकम डिजिटल एंड मेटावर्स मिशनरीज में , डॉ. जॉन हैरिस और जेफ रीड ने कहा, "डिजिटल सेवकाई की कुंजी संबंध हैं" (xii)। "तकनीक ने हमें एक वैश्विक दर्शक दिए है, और इसलिए संसार हमारी उंगलियों पर है। अगर हम और ज़्यादा इच्छुक बनें तो हम ऑनलाइन बहुत ज़्यादा असर डाल सकते हैं… डिजिटल सुसमाचार प्रचार हमें राष्ट्रीय सीमाएं पार करने और भौगोलिक दूरी को खत्म करने की अनुमति देता है ताकि हम फोन, लैपटॉप और गूगल के ज़रिए लोगों तक यीशु को पहुंच सकें, चाहे वे कहीं भी हों—संसार भर में कहीं भी! और ज़्यादातर मामलों में, हम यह मुफ़्त में कर सकते हैं!" (17)।

“फेसबुक का मिशन है 'लोगों को समुदाय बनाने और संसार को एक साथ लाने की ताकत देना'” (हैरिस और रीड, 22)। “अगस्त 2022 तक, फेसबुक पर 1 करोड़ (10 मिलियन) से ज़्यादा समूह थे, और हर महीने 1 अरब 80 करोड़ (1.8 बिलियन) से ज़्यादा लोग उनका इस्तेमाल कर रहे थे। फेसबुक समूह डिजिटल मिशनरियों (आप जैसे!) के लिए संबंध बनाने और उन लोगों के बीच बातचीत शुरू करने का एक शानदार मौका है जिनकी पहले से ही एक जैसी पसंद है” (हैरिस और रीड, 49)।

“जब कोई कंटेंट (विषय) बनाता है, तो उसे पता चलता है कि कोई सुन रहा है, यह सिर्फ़ प्रतिक्रिया, टिप्पणी और सवालों से पता चलता है। ऑनलाइन बहुत सारे दर्शक होते हैं। वे पढ़ते और सुनते हैं लेकिन जुड़ते नहीं हैं। डिजिटल मिशनरी कंटेंट पर जवाब देकर जुड़ते हैं। हम डिजिटली जवाब देकर लोगों को बताते हैं कि हम डिजिटली सुन रहे हैं” (हैरिस और रीड, 62)।

अपनी किताब *ऑनलाइन जीसस में*, एंजेल क्रेग ने कहा, “सोशल नेटवर्क के कामयाब होने की यह एक सबसे बड़ी वजह है। हम इस उम्मीद में पोस्ट करते हैं कि कोई हमें बताएगा कि हमारी ज़िंदगी मायने रखती है। हम देखे जाने के लिए पोस्ट करते हैं” (62)। “जब डिजिटल सुसमाचार प्रचार की बात आती है, तो हम आपको उत्साहित कर रहे हैं कि आप सचमुच वही इस्तेमाल करें जो आपके हाथ में है। चाहे वह स्मार्टफोन हो, लैपटॉप हो, या वी आर चश्में (VR गॉगल्स) हों, जो आपके हाथ में है उसका इस्तेमाल करें। इस बात की चिंता न करें कि आपके पास क्या नहीं है या आप क्या नहीं कर सकते। परमेश्वर आपके पास जो है उसका इस्तेमाल करेगा और उससे संसार को बदल देगा” (128–129)।

"डिजिटल मीडिया शायद मसीही मिशन का सामने सबसे महत्वपूर्ण विकास है," स्टीव हॉलिंगहर्स्ट ने जोनास कुर्लबर्ग और पीटर एम. फिलिप्स द्वारा संपादित *मिसियो देई इन ए डिजिटल एज के "फाइंडिंग जीसस ऑनलाइन: डिजिटल इवांजिल्सम एंड द फ्यूचर ऑफ क्रिश्चियन मिशन" शीर्षक वाले अध्याय में* कहा, "इसके लिए सिर्फ डिजिटल कार्यवाही (एक्शन) की नहीं बल्कि डिजिटल मिशनरी की भी जरूरत है... मैं डिजिटल सुसमाचार प्रचार को एक पुल की तरह देखता हूं... जिसके जरिए हम ऑफलाइन ऐसे लोगों से मिलते हैं जिन्हें ऑनलाइन विश्वास की छानबीन करना ज्यादा आसान लगता है क्योंकि यह लोगों को बंधनमुक्त करता है और प्रयोग करने में सक्षम बनाता है" (75)।

होलिंगहर्स्ट ने आगे कहा, “वेब आधारित सुसमचारीय संसाधन…लोगों को आमने-सामने बातचीत किए बिना या किसी भी मानवीय दबाव को महसूस किए बिना गुप्त रूप से विश्वास का पता लगाने में सक्षम बनाते हैं। जैसा कि जॉन एडमिंस्टन ने कहा, 'लोग इंटरनेट पर अपनी गुप्त सोच रखते हैं,

और इस वजह से लोग वेब पर ऐसी चीजें खोजते हैं - जैसे कि यीशु मसीह कौन हैं - जो वे सार्वजनिक रूप से नहीं खोज सकते या नहीं खोजना चाहते"' (89)।

संभावित डिजिटल रणनीतियाँ

प्रचार और आत्मिक विकास में तकनीक का इस्तेमाल करने के लिए यहां कुछ तरीके दिए गए हैं:

1. **डिजिटल ट्रैक्ट (छोटी पुस्तिका)** : पारंपरिक ट्रैक्ट (छोटी पुस्तिका) को डिजिटल रूप से बदला और बांटा जा सकता है।

2. **घटना –आधारित विज्ञापन** : क्लिक करने लायक विज्ञापन उपयोगकर्ताओं को ज़्यादा गहरे, काम के कंटेंट तक पहुंचा सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक फेसबुक विज्ञापन बातचीत शुरू करने के लिए खास सवालों के साथ फेसबुक मेसेन्जर पर बातचीत करा सकता है। फेसबुक के अभी 250 करोड़ (2.5 बिलियन) सक्रिय मासिक उपयोगकर्ता हैं।

3. **ब्लॉग, वीडियो, पॉडकास्ट और उपदेश** : यू ट्यूब जैसे मंच, जिनके हर महीने 200 करोड़ (2 बिलियन) उपयोगकर्ता हैं, इस तरह का कंटेंट साझा करने के मौके देते हैं।

4. **सोशल मीडिया मंच** : लगभग 450 करोड़ (4.5 बिलियन) उपयोगकर्ता के साथ, सोशल मीडिया किसी को भी अपनी बात सार्वजनिक रूप में साझा करने के लिए एक मंच देता है।

5. **कलीसिया की वेबसाइटें** : स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर वेबसाइटें न सिर्फ़ जानकारी दे सकती हैं, बल्कि जीवन बदलने के मार्ग भी दिखा सकती हैं। समाज अब वेब का इस्तेमाल सिर्फ़ जानकारी के लिए करने के बजाय रिश्ते बनाने की तरफ़ बढ़ रहा है।

6. **मोबाइल ऐप्स** : लगभग 92 प्रतिशत इंटरनेट उपयोगकर्ता मोबाइल उपकरणों के ज़रिए इसे उपयोग करते हैं, जिससे ऐप्स एक ज़रूरी उपकरण बन जाते हैं।

7. **ऑनलाइन समुदाय** : ये प्रार्थना, शिक्षा और संगति को आसान बना सकती हैं, जिससे विश्वासियों को अपने विश्वास में बढ़ने में मदद मिलती है।

8. **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस** : AI का उपयोग पाठ और पाठ्यक्रम सामग्री की मूल भाषा अनुवाद के लिए किया जा सकता है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ऐसी सामग्री को सही तरीके से संपादित (एडिट) करने के लिए कोई और हो।

9. **ऑनलाइन शिक्षा** : पाठ्यक्रम और कार्यक्रम सीखने और आत्मिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।

10. **ऑडियो और विज़ुअल तकनीक** : ये उपकरण खास तौर पर मौखिक संस्कृति तक पहुंचने के लिए बहुत काम के हैं।

इस सामग्री पर काम करते समय, लेखक ने कनाडा में हमारे यूनाइटेड पेन्टीकोस्टल कलीसियाओं में से एक से संपर्क किया, जो कई डिजिटल उपकरणों और मंचों का अच्छे से इस्तेमाल करती है। उन्होंने जो बताया, वह यह है:

1. उनके यू ट्यूब चैनल के पूरे जीवनकाल में इसके सदस्य (सब्सक्राइबर) 107,000 से ज़्यादा हो गए हैं।

2. इसके अलावा, चैनल अभी भी उन लोगों तक पहुंचता है जो सदस्यता (सब्सक्राइब) नहीं लेते हैं। अनुमान है कि 71 प्रतिशत दर्शक सदस्य (सब्सक्राइबर) नहीं हैं।

3. यूट्यूब चैनल पर हर दिन औसतन 2,000-3,000 अनोखे दर्शक आते हैं।

4. पिछले साल उनके पास 109 देशों के दर्शक थे। चैनल के पूरे जीवनकाल में, उनके पास 186 देशों के दर्शक रहे हैं।

5. उनके फेसबुक पेज पर 14,700 फॉलोअर्स (अनुयायी) हैं।

6. पिछले साल इस पेज पर 212,375 लोग पहुंचे।

7. फेसबुक पर लाइव स्ट्रीम की गई सेवा में, हर सेवा लगभग 1,500–2,000 लोगों तक पहुँचती हैं।

यह रिपोर्ट प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए डिजिटल उपकरणों के इस्तेमाल की क्षमता पर प्रकाश डालती है। अगर वे ऐसा कर सकते हैं, तो आप भी कर सकते हैं!

मेरे पास एक कहानी है

मेटा ए आई लामा 3.2 (Meta AI (Llama 3.2) की बनाई हुई, आगे की कहानी डिजिटल कोशिशों की क्षमता दिखाती है। हालांकि नाम, कहानी, देश और पड़ोस अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन इच्छित परिणाम एक जैसे ही रहते हैं, जो सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव में डिजिटल कोशिशों की ताकत दिखाते हैं।

युद्ध से जूझ रहे यमन में, जहाँ मसीहियों पर सताव बहुत ज़्यादा है, अहमद नाम का एक नौजवान चुपचाप निराशा में जी रहा था। खतरों के बावजूद, अहमद चुपके से ऑनलाइन सत्य और अर्थ खोज रहा था।

एक दिन इंटरनेट ब्राउज़ करते समय, अहमद को मिडिल ईस्ट में यूनाइटेड पेंटीकोस्टल चर्च इंटरनेशनल (UPCI) की एक वेबसाइट मिली। वेबसाइट अरबी में थी, और आशा, प्रेम और छुटकारे का उसका संदेश अहमद के दिल को छू गया।

अहमद ने वेबसाइट को देखने, गवाही पढ़ने और उन लोगों के वीडियो देखने में घंटों बिताए जिन्हें यीशु मसीह में नया जीवन मिला था। वह खास तौर पर प्रेरिताई शिक्षा वाले भाग से बहुत आकर्षित हुआ, जिससे उसके अंदर यीशु का अनुकरण करने की गहरी इच्छा जागी।

जैसे-जैसे वह वेबसाइट से जुड़ता गया, अहमद को अपने दिल में एक गहरा विश्वास महसूस होने लगा। उसे यीशु के नाम पर बपतिस्मा लेने की बहुत ज़्यादा इच्छा होने लगी।

अहमद ने वेबसाइट पर दिए गए संपर्क पते पर एक ईमेल भेजा, जिसमें यीशु के नाम पर बपतिस्मा लेने का एक निवेदन किया गया था। यह ईमेल मिडिल ईस्ट में UPCI के एक साहसिक पासबान , पासबान अम्मार को मिला, जो अहमद से सुनकर बहुत खुश हुए।

पासबान अम्मार ने जल्दी से अहमद के साथ एक खास सभा (मीटिंग) का इंतज़ाम किया, यह जानते हुए कि यीशु के पीछे चलने का उसका फैसला बहुत जोखिम वाला होगा। जैसे ही अहमद ने यीशु के नाम पर बपतिस्मा लिया, उसे ऐसी शांति और आनन्द महसूस हुआ जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था।

दिन हफ़्तों में बदल गए, और अहमद पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की तलाश में लगा रहा। उसने घंटों प्रार्थना, उपवास और पवित्रशास्त्र का अध्ययन किया। आखिरकार, वह दिन आ ही गया जब अहमद को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला, और वह आत्मा द्वारा दी गई अन्य भाषाओं में बोलने लगा।

एक ऐसे देश में रहने की मुश्किलों के बावजूद, जहाँ पहुँचना मुश्किल था, अहमद ने डिजिटल तरीकों से शिष्यता और आत्मिक प्रशिक्षण पाना जारी रखा। वह ऑनलाइन बाइबल अध्ययन, वेबिनार और सम्मेलनों में शामिल हुआ, जिससे उसका विश्वास और पवित्रशास्त्र का ज्ञान बढ़ता गया।

जैसे-जैसे अहमद का विश्वास बढ़ता गया, उसे सेवकाई की तरफ़ बुलाहट महसूस होने लगी। उसने दूसरों के साथ अपनी गवाही साझा करना, बाइबल अध्ययन में अगुवाई करना और भूमिगत (गुप्त) कलीसियाओं में प्रचार करना शुरू कर दिया।

आखिरकार, अहमद एक पासबान और कलीसिया संस्थापक बन गया, और यमन में नई कलीसियाओं की स्थापना के लिए अपने वरदानों का इस्तेमाल किया। खतरों के बावजूद, उसने सुसमाचार का प्रचार करना, नए विश्वासियों को शिष्य बनाना और उन्हें यीशु के नाम पर बपतिस्मा देना जारी रखा।

अहमद की कहानी डिजिटल प्रचार की ताकत और UPCI की दी गई वेबसाइट के प्रभाव का सबूत है, जो एक ऐसे क्षेत्र में है जहाँ पहुँचना मुश्किल है। एक ऐसे क्षेत्र में जहाँ मसीहियों पर सताव बहुत ज़्यादा है, एक नौजवान की ज़िंदगी एक डिजिटल गवाह ने हमेशा के लिए बदल दी, और अगुवों की एक नई पीढ़ी सुसमाचार फैलाने के लिए सामने आई।

निष्कर्ष

डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव बहुत सारी और अलग-अलग तरह की संभावनाएं और मौके देते हैं। इरादतन अपने डिजिटल शिष्यत्व कौशल को विकसित करके और अलग-अलग तरह के लोगों से जुड़कर, हम ऐसे डिजिटल उपकरणों और मंचों का इस्तेमाल कर सकते हैं जो हमारे जनसम्पर्क, सेवकाई और बाइबिल पर आधारित शिक्षा देने के तरीकों को बेहतर बना सकते हैं। इस पाठ या पाठ्यक्रम में बताए गए सिद्धांत और तरीके आपको डिजिटल संसार में अच्छे से काम करने, अच्छे संपर्क बनाने, बढ़िया ऑनलाइन या डिजिटल कंटेंट (विषय) बनाने और संसार के कोने-कोने तक सुसमाचार फैलाने में मदद करें।

शायद उस बड़ी महान सभा वाले दिन, उस बड़ी संख्या में कुछ ऐसे लोग होंगे जिन्होंने डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव की वजह से अपनी मसीही यात्रा शुरू की या आगे बढ़ाई। “इस के बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़,

जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है" (प्रकाशितवाक्य 7:9)।

डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए अभ्यास और विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

नया करना (RENEW) (स्कूल ऑफ़ मिशन्स), वैश्विक मिशनरी, क्षेत्रीय मिशनरी:

यह तीस मिनट की एक संवादात्मक पहल है जिसे किसी खास क्षेत्र, देश या संस्कृति के लिए सही डिजिटल जुड़ाव और सुसमाचार प्रचार गतिविधि तय करने में मदद के लिए गोलमेज चर्चा और विचार-मंथन (बुद्धिशीलता) अभ्यास के तौर पर किया जा सकता है। अगर यह अभ्यास नया करना (RENEW) (स्कूल ऑफ़ मिशन्स) जैसे किसी कार्यक्रम में किया जाता है, तो यह एक जैसे देशों या संस्कृति को एक साथ लाने के लिए सबसे अच्छा काम कर सकता है।

उद्धेश्य : डिजिटल जुड़ाव और सुसमाचार प्रचार के ऐसे विचार जल्दी से बनाना और उन्हें प्राथमिकता

देना जो किसी खास देश या क्षेत्र में सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और संभव (व्यवहार्य) हों। कोई भी विचार गलत नहीं माना जाएगा। इस बिन्दु पर, विचार मंथन ज़रूरी है।

ज़रूरी सामग्री:

- व्हाइटबोर्ड (छोटा साइज़) या कागज़ की एक बड़ी शीट (शायद बहुत बड़े स्टिकी (चिपकने वाले) नोट टाइप)
- मार्कर या रंगीन पेन
- स्टिकी नोट्स या इंडेक्स कार्ड

प्रतिभागियों को रचनात्मक तरीके से सोचने और नए समाधानों पर विचार करने के लिए उत्साहित करे।

अभ्यास चरण :

चरण 1: परिचय और संदर्भ स्थिति (2 मिनट)

a. अभ्यास और उसके उद्धेश्य के बारे में बताएं।
b. प्रतिभागियों से अपने देश या संस्कृति के बारे में बताने के लिए कहें।

चरण 2: डिजिटल जुड़ाव विचारों पर विचार मंथन करें (15 मिनट)

a. प्रतिभागियों से डिजिटल जुड़ाव के ऐसे विचारों पर विचार मंथन करने के लिए कहें जो उनके देश या संस्कृति में काम कर सकें। उदाहरणों में ये शामिल हो सकते हैं (लेकिन सिर्फ़ इन्हीं तक सीमित नहीं हैं):

(1) सोशल मीडिया अभियान
(2) ऑनलाइन प्रार्थना समूह
(3) डिजिटल बाइबल अध्ययन
(4) पॉडकास्ट या ऑनलाइन रेडियो शो
(5) वेबसाइट

b. हर विचार को स्टिकी नोट या इंडेक्स कार्ड पर लिखें

c. प्रतिभागियों को एक-दूसरे के विचार पर काम करने के लिए बढ़ावा दें।

चरण 3: प्राथमिकता तय करना (10 मिनट)

a. प्रतिभागियों से विचारों का अवलोकन करने और उन्हें संभावित और सांस्कृतिक रूप से तर्कसंगता के आधार पर प्राथमिकता देने के लिए कहें।
b. शीर्ष 3–5 विचारों को पहचानने के लिए एक सामान्य वोटिंग व्यवस्था (जैसे, डॉट वोटिंग) का इस्तेमाल करें।
c. प्राथमिकता वाले विचारों को व्हाइटबोर्ड या पेपर पर लिखें।

चरण 4: निष्कर्ष और अगले चरण (3 मिनट)

a. शीर्ष विचारों को संक्षिप्त में बताएं।
b. प्रतिभागियों से कहें कि वे अपने चुने हुए डिजिटल जुड़ाव विचार को छानबीन करने और लागू करने के लिए समर्पण करें।
c. प्रतिभागियों को अपनी प्रगति साझा करने और एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने के लिए उत्साहित करें।

चरण 5: सभी इंडेक्स कार्ड या स्टिकी नोट्स जमा किए जा सकते हैं, और डिजिटल जुड़ाव विकल्पों/रणनीतियों की एक मुख्य सूची बनाई जा सकती है।

गेट्स (GATS) शिक्षक दल विकास कार्यशाला

उद्देश्य: शिक्षक दल को ज्ञान, कौशल और रणनीति से लैस करना ताकि वे डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को उनके सिखाने, शोध करने और सेवकाई में अच्छे से जोड़ सकें।

विचार विमर्श के प्रश्न

1. बाइबल स्कूल के संदर्भ में आप डिजिटल शिक्षा और जुड़ाव को कैसे परिभाषित करेंगे?
2. शिक्षा और जुड़ाव के लिए कौन से डिजिटल उपकरण और मंच सबसे प्रभावशाली हैं?

3. हम सोशल मीडिया, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और दूसरे डिजिटल संसाधनों का इस्तेमाल करके अपने छात्रों की संख्या कैसे बढ़ा सकते हैं?

4. डिजिटल उपकरण और मंच सिखाने को कैसे बेहतर बना सकते हैं (प्रत्यक्ष शिक्षकों और प्रत्यक्ष छात्रों के साथ)?

5. गेट्स (GATS) शिक्षक दल विकास पाठों और कार्यक्रम बनाने वाले डिजिटल उपकरणों का बेहतर इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं? किन तरीकों से? किन डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करके?

6. छात्रों को विकसित करने, आत्मिक बनाने और प्रशिक्षण के लिए डिजिटल उपकरणों को लागू करने और इस्तेमाल करने के कुछ फायदे और नुकसान क्या हैं?

7. गेट्स (GATS) (ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ़ थियोलॉजिकल स्टडीज़) के दर्शन और मिशन को पूरा करने में कौन सा ज़्यादा फ़ायदेमंद है: प्रत्यक्ष बातचीत और प्रशिक्षण, ऑनलाइन बातचीत और प्रशिक्षण, या दोनों? क्यों और क्यों नहीं? याद रखें कि गेट्स (GATS) और इसके सदस्य देशों का मिशन पुरुषों और महिलाओं को प्रेरिताई सेवकाई में उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए विकसित और तैयार करना है।

8. डिजिटल शिक्षा के लिए किस तरह का कंटेंट (विषय) या पाठ्यक्रम सबसे प्रभावशाली होगा?

9. हम सबसे अच्छा कंटेंट (विषय) और पाठ्यक्रम कैसे बना सकते हैं जो ज़्यादा लोगों को पसंद आए और उनके लिए फायदेमंद हो?

10. बाइबल स्कूल की वेबसाइट में किस तरह का कंटेंट (विषय) या क्षेत्र होना चाहिए? कभी-कभी कॉलेज की वेबसाइट देखने वाले लेकिन छात्र होने के लायक न होने वाले व्यक्ति के लिए वेबसाइट पर किस तरह की डिजिटल सुसमाचार प्रचार सामग्री को शामिल किया जा सकता है?

11. हम डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के साथ अपने प्रभाव को कैसे माप सकते हैं? प्रभाव का अंदाज़ा लगाने के लिए हम कौन से मापदंड और मूल्यांकन उपकरणों का इस्तेमाल कर सकते हैं?

क्षेत्रीय और राष्ट्रीय कलीसियाओं की कार्यशाला

इस बात पर चर्चा करना कि कलीसियाई संगठन में डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को कैसे लागू किया जाए, क्षेत्र से लेकर उप-क्षेत्र तक, राष्ट्रीय कलीसियाओं से लेकर ज़मीनी स्तर की स्थानीय कलीसियाओं तक।

उद्धेश्य : हमारे महाद्वीप/क्षेत्र में कलीसिया के मिशन को आगे बढ़ाने में डिजिटल उपकरणों और तकनीक की भूमिका का पता लगाना, और प्रभावशाली डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए रणनीति पर चर्चा करना।

विचार विमर्श के प्रश्न

1. डिजिटल माहौल लोगों के कलीसिया के साथ बातचीत करने, संवाद करने और जुड़ने के तरीके को कैसे बदल रहा है? यह हमारी कलीसियाओं के लिए क्या अवसर और चुनौतियाँ पेश करता है?

2. प्रभावशाली डिजिटल सुसमाचार प्रचार के लिए खास सिद्धांत और रणनीतियाँ क्या हैं? हमारा क्षेत्र, उप-क्षेत्र, देश और कलीसिया, सुसमाचार बाँटने और नए लोगों तक पहुंचने के लिए डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं?

3. हमारे क्षेत्र, उप- क्षेत्र और देशों में कौन से डिजिटल उपकरण सबसे प्रभावशाली हैं? अभी कौन से डिजिटल उपकरण इस्तेमाल हो रहे हैं जो प्रभावशाली हैं?

4. हम देशों और कलीसियाओं को एक प्रभावशाली वेबसाइट बनाने के लिए बढ़ावा देने की योजना को कैसे लागू कर सकते हैं जो जानकारी देने वाली और संबंधपरक दोनों हो? वेबसाइट होना क्यों ज़रूरी है? वेबसाइट में क्या होना चाहिए?

5. हमारी कलीसियाएं विश्वासियों को शिष्य बनाने और उन्हें सेवकाई के लिए तैयार करने के लिए डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल कैसे कर सकती हैं? इस प्रक्रिया में ऑनलाइन समुदाय, सोशल मीडिया और डिजिटल संसाधन क्या भूमिका निभा सकते हैं?

6. डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को बढ़ावा देने में नेतृत्व की क्या भूमिका है?

7. हमारे पास ऐसे कौन से उदाहरण हैं जिनमें डिजिटल उपकरणों, वेबसाइटों इत्यादि का इस्तेमाल उस क्षेत्र, उप-क्षेत्र या देश में किया जा रहा है, जो दूसरों के लिए एक आदर्श (मॉडल) बन सके?

संसाधन

देश के लिए और देश की स्थानीय कलीसियाओं के लिए एक वेबसाइट बनाने के लिए एक ढांचा (पूर्व निर्मित खाका) दें। (शायद यह ग्लोबल मिशन्स, UPCI के डिजिटल जुड़ाव समन्वयक देंगे, और क्षेत्रीय, सब-क्षेत्रीय, और/या स्थानीय नेतृत्व इसे ठीक करेंगे)।

नेतृत्व विकास कार्यशाला

उद्धेश्य : पसबानों और कलीसिया के अगुवों को ज्ञान, कौशल और रणनीति से तैयार (लैस) करना ताकि वे डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को अपनी सेवकाई के कामों में अच्छे से शामिल कर सकें।

विचार विमर्श के प्रश्न

1. आपकी कलीसिया या सेवकाई में डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए आपका क्या दर्शन है? इस दर्शन को पाने के लिए आप रणनीति कैसे बना सकते हैं?

2. डिजिटल सुसमाचार प्रचार और शिक्षा के लिए किस तरह का कंटेंट (विषय) सबसे प्रभावशाली है?

3. नेतृत्व विकास में कौन से डिजिटल उपकरण और मंच फायदेमंद हो सकते हैं?

4. कलीसिया में डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को बढ़ावा देने में नेतृत्व की भूमिका पर चर्चा करें। दर्शन, रणनीति और संसाधन वितरण के महत्व को समझें।

5. कौन से संसाधन आसानी से मिल सकते हैं? नेतृत्व विकास के लिए उपलब्ध पाठ, वीडियो या संसाधन की एक सूची बनाएं, जिन्हें देश में UPC की वेबसाइट में, या सेवकाई या स्थानीय कलीसिया की वेबसाइट में भी जोड़ा जा सके।

वैश्विक परिसर और छात्र सेवकाई कार्यशाला

उद्धेश्य : हाई स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों और छात्र सेवकाई को डिजिटल सुसमाचार प्रचार , शिक्षा और जुड़ाव को उनकी कैंपस सेवकाई अभ्यास में अच्छे से जोड़ने के लिए ज्ञान, कौशल और रणनीति से लैस करना।

विचार विमर्श के प्रश्न

1. आप खुद को ऑनलाइन कैसे दिखाते हैं (या दिखा सकते हैं), और इसका दूसरों के साथ आपकी गवाही और संबंधों पर क्या असर पड़ता है?

2. ऑनलाइन सुसमाचार साझा करने और सुसमाचार प्रचार और सेवकाई में शामिल होने के कुछ प्रभावशाली तरीके क्या हैं? आप अपने साथियों तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया, ऑनलाइन फोरम और दूसरे डिजिटल मंचों का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं?

3. आप दूसरों को सिखाने और अगुवाई करने के लिए डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं? इस प्रक्रिया में ऑनलाइन समुदाय, सोशल मीडिया और डिजिटल संसाधन क्या भूमिका निभा सकते हैं?

4. सांस्कृतिक संदर्भ डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव पर कैसे प्रभाव डालता है? अलग-अलग सांस्कृतिक भूमिकाओं के लोगों के साथ ऑनलाइन अच्छे से जुड़ने के लिए कुछ बातें क्या हैं?

5. कैंपस में सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल करने में आपको किन चुनौतियों और अवसरों का सामना करना पड़ता है? आप इन चुनौतियों से कैसे पार पा सकते हैं और इन अवसरों का फ़ायदा कैसे उठा सकते हैं?

6. डिजिटल कहानी बताने का इस्तेमाल सुसमाचार प्रचार और शिक्षा के लिए कैसे किया जा सकता है? कहानियों को साझा करने में कहानी के महत्व और तकनीक की भूमिका पर चर्चा करें।

7. छात्रों के लिए ऑनलाइन समुदाय बनाने और बनाए रखने के कुछ तरीके क्या हैं? समुदाय जुड़ाव के लिए सोशल मीडिया, ऑनलाइन फोरम और दूसरे डिजिटल मंचों का इस्तेमाल करने के बारे में जानें।

8. कैंपस सेवकाई की वेबसाइट पर या छात्रों को कौन से डिजिटल सुसमाचार प्रचार और शिक्षा संसाधन दिए जा सकते हैं?

यह चर्चा और अभ्यास हाई स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों को डिजिटल सुसमाचार प्रचार , शिक्षा और जुड़ाव को उनकी कैंपस सेवकाई अभ्यासों में अच्छे से जोड़ने के लिए ज्ञान, कौशल और रणनीति से लैस करने के लिए तैयार (डिज़ाइन) की गई है। खास कॉन्सेप्ट्स (विषयों) को छानबीन करके, सबसे अच्छे अभ्यासों पर चर्चा करके और एक डिजिटल सेवकाई योजना डिज़ाइन करके, छात्र अपने भविष्य के कामों में डिजिटल तकनीक का फायदा उठाने के लिए अच्छी तरह तैयार होंगे।

स्थानीय कलीसिया कार्यशाला

उद्धेश्य : स्थानीय कलीसिया को उनके सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के प्रयासों को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल उपकरण बनाने में मदद करना।

विचार विमर्श के प्रश्न

1. डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए कलीसिया का क्या दर्शन है? डिजिटल उपकरण इस दर्शन का कैसे समर्थन कर सकते हैं?

2. डिजिटल सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के लिए कलीसिया के लक्षित दर्शक कौन है? उनकी ज़रूरतें और पसंद क्या हैं?

3. कलीसिया अभी कौन से डिजिटल उपकरणों इस्तेमाल कर रही है? सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव को बढ़ाने के लिए कौन से नए उपकरण खोजे जा सकते हैं?

4. डिजिटल सुसमाचार प्रचार और शिक्षा के लिए किस तरह का कंटेंट (विषय) सबसे प्रभावशाली है? कलीसिया ऐसा कंटेंट (विषय) कैसे बना और संयोजित कर सकती है जो उसके दर्शकों को पसंद आए?

5. कलीसिया अपने डिजिटल कंटेंट (विषय) के साथ जुड़ाव और बातचीत को बढ़ावा देने के लिए किन रणनीतियों और उपकरणों का इस्तेमाल कर सकती है? यह अपने दर्शकों के साथ समुदाय की भावना और संबंध को कैसे बढ़ावा दे सकता है?

6. स्थानीय कलीसिया की वेबसाइट में किन चीज़ों को शामिल किया जाना चाहिए?

7. स्थानीय कलीसिया की वेबसाइट के कुछ उदाहरण क्या हैं जिन्हें हम अपनी वेबसाइट बनाने या उसे बेहतर बनाने के लिए एक आदर्श (मॉडल) के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं?

यह चर्चा और अभ्यास एक स्थानीय कलीसिया को उनके सुसमाचार प्रचार, शिक्षा और जुड़ाव के प्रयासों को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल उपकरणों को बनाने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई है। खास कॉन्सेप्ट्स (विषयों) को समझने, सबसे अच्छे तरीकों पर चर्चा करने और एक डिजिटल उपकरण योजना बनाने से, कलीसिया अपने भविष्य के प्रयासों में डिजिटल तकनीक का फ़ायदा उठाने के लिए अच्छी तरह तैयार हो जाएगी।

हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

हर दिन पिन्तेकुस्त और बाइबल स्कूल

मुख्य पद

"और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।" (II तीमुथियुस 2:2)

आइए, बाइबल स्कूलों, वैश्विक प्रशिक्षकों और बाइबल स्कूल के छात्रों के पीछे की *वजह को समझते हैं।*

दर्शन

इसका उद्धेश्य मसीही अगुवों की नई पीढ़ी को परमेश्वर के वचन की गहरी समझ और उसे दूसरों के साथ अच्छे से साझा करने की कुशलता/योग्यता प्रदान करना है।

बाइबल स्कूल क्यों ?

- **शिष्यत्व** : बाइबल स्कूल छात्रों को परमेश्वर के साथ अपने संबंध को गहरा करने, आत्मिक अनुशासन विकसित करने और बाइबल के अनुसार वैश्विक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए एक अनोखा वातावरण प्रदान करते हैं।
- **नेतृत्व विकास** : बाइबल स्कूल भविष्य के मसीही अगुवों के लिए एक प्रक्षेपण मंच का काम करते हैं, जो सेवकाई, नेतृत्व और सुसमाचार प्रचार में प्रशिक्षण देते हैं।
- **समुदाय** : बाइबल स्कूल एक सहयोगी समुदाय प्रदान करते हैं जहाँ छात्र एक जैसी सोच वाले लोगों से जुड़ सकते हैं, जीवन भर के संबंध बना सकते हैं, और अपने विश्वास में एक साथ बढ़ सकते हैं।

वैश्विक प्रशिक्षक क्यों?

- **वैश्विक पहुंच** : वैश्विक प्रशिक्षक संसार भर में अच्छी बाइबिल शिक्षा की ज़रूरत को समझते हैं। संसार भर में शिक्षक दल विकसित करके, वे ज़्यादा छात्रों, कलीसियाओं और समुदायों तक पहुंच सकते हैं।
- **सांस्कृतिक संबंद्धता** : स्थानीय शिक्षक दल को प्रशिक्षण देकर, वैश्विक प्रशिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि बाइबिल की शिक्षा हर क्षेत्र की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक ज़रूरतों के अनुसार हो और सुसंगत हो।
- **स्थिरता** : स्थानीय शिक्षक दल को मज़बूत बनाने से बाइबल स्कूल आत्मनिर्भर बन सकते हैं, बाहरी संसाधनों पर निर्भरता कम हो सकती है और उन्हें अपने-अपने संदर्भ में आगे बढ़ने में मदद मिल सकती है।

बाइबल स्कूल के छात्र ही क्यों?

- **सेवा के लिए जुनून** : बाइबल स्कूल के छात्र अक्सर परमेश्वर और दूसरों की सेवा करने के लिए जुनूनी होते हैं। वे सीखने, आगे बढ़ने और अपने समुदायों में सार्थक प्रभाव डालने के लिए उत्सुक रहते हैं।

- **ज्ञान की भूख** : बाइबल स्कूल के छात्र परमेश्वर के वचन की गहरी समझ और प्रतिदिन के जीवन में उसके इस्तेमाल के लिए भूखे हैं।

- **प्रभाव की संभावना** : बाइबल स्कूल के छात्रों में निवेश करके, वैश्विक प्रशिक्षक और बाइबल स्कूल मसीही अगुवों की अगली पीढ़ी को बना सकते हैं, जो आगे चलकर कलीसियाओं , समुदायों और देशों पर मसीह के लिए प्रभाव डालेंगे।

बाइबल स्कूलों, वैश्विक प्रशिक्षकों और बाइबल स्कूल के छात्रों पर ध्यान देकर, हम आत्मिक विकास, नेतृत्व विकसित विकास और समुदायों में बदलाव का ऐसा प्रभाव पैदा कर सकते हैं जो कक्षा से कहीं आगे तक जा सकता है ।

वापस जाएं और *क्यों से शुरू करें*। बाइबल स्कूल क्यों? बाइबल स्कूल के छात्र क्यों? एक की सामर्थ के कारण। एक व्यक्ति तक सुसमाचार पहुंचाना और उसे सुसमाचार का सेवक बनने के लिए सशक्त बनाना, इसका गहरा और दूरगामी प्रभाव हो सकता है। यहां संभावित व्यापक प्रभाव की एक झलक दी गई है:

गुणात्मक प्रभाव

जब कोई व्यक्ति विश्वास में आता है और सुसमाचार का सेवक बन जाता है, तो वह यह कर सकता है:

- **उनके परिवार और दोस्तों तक पहुँच** : अपने प्रियजनों के साथ सुसमाचार साझा करने से विश्वास और बदलाव का व्यापक प्रभाव होता है।

- **अपने समुदायों को प्रभावित करना** : वे अपने पड़ोस, काम की जगह या स्कूल में आशा, करुणा और सत्य की रोशनी बन सकते हैं।

- **दूसरों को शिष्य बनाना** : वे नए विश्वासियों का मार्गदर्शन और अगुवाई करते हैं, जिससे उनका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है और वे तेज़ी से फैल सकते हैं।

संभावित प्रभाव

नीचे दिए गए आंकड़ों पर गौर करें:

- **1 व्यक्ति 10–100 लोगों तक पहुंच सकता है** : व्यक्तिगत संबंधों, सामाजिक नेटवर्कों और समुदाय की भागीदारी के माध्यम से।

- **1 सेवक 100-1,000 लोगों पर प्रभाव डाल सकता है** : प्रचार करने, सिखाने और पासबानी देखभाल के माध्यम से।

- **1 कलीसिया 1,000–10,000 लोगों को प्रभावित कर सकती है** : सामूहिक प्रचार प्रसार, सुसमाचार प्रचार और सामुदायिक सेवा के माध्यम से।

स्थानीय कलीसिया संस्थापक

संसार के कई हिस्सों में, व्यक्तिगत कलीसिया संस्थापक पूरे गांवों, कस्बों और शहरों तक सुसमाचार पहुंचा रहे हैं, और समुदायों और संस्कृतियों को बदल रहे हैं।

एक की सामर्थ

एक व्यक्ति तक सुसमाचार पहुंचाना और उसे सुसमाचार का सेवक बनने के लिए सशक्त बनाना कर सकता है :

- **जीवनों को बदलना** : सुसमाचार की सामर्थ के माध्यम से व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों को बदलना।

- **पीढ़ियों पर प्रभावित करना** : विश्वास, आशा और प्रेम की एक ऐसी विरासत छोड़ना जो पीढ़ियों तक बनी रहे।

- **परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाना** : संसार भर में सुसमाचार को फैलाने में मदद करना, क्योंकि सभी देशों और भूमिकाओं के विश्वासी यीशु मसीह की आराधना और सेवा करने के लिए एक साथ आते हैं।

एक व्यक्ति तक सुसमाचार पहुँचाने की सामर्थ बहुत ज़्यादा है, जिसके दूरगामी परिणाम अनंतता तक गूंजते रह सकते हैं।

हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला
ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज

ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ़ थियोलॉजिकल स्टडीज़ (GATS) (गेट्स) का दर्शन संसार भर में धर्मशास्त्रीय शिक्षा और नेतृत्व प्रशिक्षण के माध्यम से अगुवों को सशक्त बनाने और जीवन बदलने पर केंद्रित है। GATS (गेट्स) का उद्धेश्य सेवकों और आम लोगों को संस्कृति के हिसाब से ढलने वाला पाठ्यक्रम देना, परमेश्वर के उद्धेश्य की गहरी समझ को बढ़ावा देना और प्रेरिताई की सेवकाई को बढ़ावा देना है।

असल में, GATS (गेट्स) का उद्धेश्य है:

- **धर्मशास्त्रीय शिक्षा को आगे बढ़ाना** : संसार भर में, खासकर पिछड़े क्षेत्रों में, लोगों को अच्छी धर्मशास्त्रीय शिक्षा प्रदान करना।

- **अगुवों को सशक्त बनाना** : अगुवों को धर्मशास्त्र, नेतृत्व और सेवकाई में व्यावहारिक प्रशिक्षण देना, ताकि वे अपने समुदायों में प्रभावशाली रूप से सेवा कर सकें।

- **वैश्विक संपर्कों को बढ़ावा दें** : संसार भर के धर्मशास्त्रीय संस्थानों, प्रशिक्षकों और अगुवों के बीच सहयोग और ज्ञान साझा करने में मदद करें।

इस दर्शन को पाने के लिए, GATS (गेट्स) ने क्षेत्रीय प्रतिनिधियों, पाठ्यक्रम विकसित समितियों और पिन्तेकुस्त पब्लिशिंग हाउस जैसी संस्थाओं के साथ साझेदारी का एक वैश्विक नेटवर्क बनाया है। साथ मिलकर काम करके, GATS (गेट्स) का उद्धेश्य धर्मशास्त्रीय शिक्षा की शक्ति से बदले हुए सशक्त अगुवों के एक वैश्विक समुदाय को बनाना है।

ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ़ थियोलॉजिकल स्टडीज़ और इसके सदस्य देश पुरुषों और महिलाओं को प्रेरिताई की सेवा में अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए प्रशिक्षित और विकसित करते हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बीसवीं सदी की शुरुआत में, चार्ल्स परहम नाम के एक बाइबल स्कूल के शिक्षक अपने छात्रों के सामने खड़े होकर उन्हें एक सोचने पर मजबूर करने वाला काम दे रहे थे। शायद कुछ लोग कुड़कुड़ा रहे थे और फुसफुसा रहे थे, "एक और काम!" फिर भी यह शिक्षक उस काम के महत्व को जानता था जिसे वह शुरू करने वाला था। उसने अपने छात्रों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के अखंडनीय (पक्के) बाइबिल के सबूतों के लिए पवित्रशास्त्रों में लगन से खोजने के लिए उत्साहित किया, ताकि वे संसार के सामने कुछ ऐसा पेश कर सकें जिसे नकारा न जा सके—कुछ ऐसा जो वचन के साथ पूरी तरह से मेल खाता हो।

परहम तीन दिन के लिए चले गए और 31 दिसंबर, 1900 की सुबह छात्रों की खोज की रिपोर्ट सुनने के लिए लौटे। उन्हें हैरानी हुई कि उन सभी ने एक ही सत्य बताया: पिन्तेकुस्त की आशीषों के अलग-अलग प्रकटीकरणों के बावजूद, हर बार यह अखंडनीय (पक्का) सबूत था कि वे अन्य भाषाओं में बात करते थे।

अगले दिन, एग्नेस ओज़मैन, जो एक छात्रा थीं, को पवित्र आत्मा मिला जब परहम ने उस पर हाथ रखा। सिर्फ़ दो दिनों में, दूसरे छात्रों ने और यहाँ तक कि खुद शिक्षक ने भी पवित्र आत्मा की ऐसी ही भरपूरी (बारिश) महसूस की। इस तरह, पिन्तेकुस्त की बेदारी एक बाइबल स्कूल की कक्षा की दीवारों के अंदर शुरू हुई —एक ऐसी बेदारी या आंदोलन जिसे कोई रोक नहीं पाएगा।

संसार के लगभग 27 प्रतिशत मसीही और संसार की 8 प्रतिशत आबादी खुद को पिन्तेकुस्त या करिश्माई मानती है, और हर साल इनकी संख्या में लगभग 1 करोड़ 90 लाख (19 मिलियन) की हैरान करने वाली बढ़ोतरी हो रही है। अभी के अनुमान बताते हैं कि इनकी संख्या लगभग 60 करोड़ (600 मिलियन) है।

संसार भर में पिन्तेकुस्त/करिश्माई लोगों की पहचान बनाना—ऐसे आंदोलन के लिए एक बड़ी कामयाबी है जो इतने साधारण हालात में शुरू हुआ था।

सोचिए अगर हमारे बाइबल स्कूल इस अनोखे दर्शन को फिर से पा सकें! इतिहास खुद को दोहराता है, खासकर तब जब शिक्षक कक्षा में छिपी हुई बहुत ज़्यादा क्षमता और उसमें बैठने वालों में छिपी उम्मीद को समझते हैं। मैं किसी भी प्लेटफॉर्म या मंच से हियाव से कहूँगा कि शिक्षा कलीसिया की बेदारी की सेवकाई की सबसे ज़रूरी चीज़ है! यह एक अनन्त निवेश है जो दूरदर्शी योजना को जगाता है। जब मेरे मित्र बेदारी, वैश्विक प्रभाव, या इन अंतिम दिनों में परमेश्वर के आत्मा के सामर्थी काम के बारे में बात करते हैं, तो मैं अपनी आँखों में जोश की चमक के साथ उन्हें याद दिलाता हूँ कि यह सब बाइबल स्कूल की कक्षा के गहरे प्रभाव से आता है!

हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

हर दिन पिन्तेकुस्त के लिए लक्ष्य

मुख्य पद

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे। (प्रेरितों 1:8)

और प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रूके। (प्रेरितों 5:42)

परिचय:

प्रेरितों के काम की पुस्तक यीशु के दर्शन और उसके शिष्यों के लिए अंतिम वचनों से शुरू होती है। शिष्यों ने एक-एक करके दूसरों तक सुसमाचार पहुँचाकर, एक-एक करके उसके दर्शन को पूरा किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक यीशु के बड़े दर्शन को पूरा करने में उनकी प्रगति का लेखा है।

ओलिवर वेंडेल होम्स ने एक बार कहा था, "संसार में सबसे बड़ी बात यह नहीं है कि हम कहाँ खड़े हैं, बल्कि यह है कि हम किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।"

कहा गया है, "अगर आप कुछ नहीं पर निशाना लगाते है, तो आप हर बार उस पर निशाना लगा लेंगे।" हर दिन पिन्तेकुस्त को पूरा करना भी कोई अलग बात नहीं है। बिना किसी लक्ष्य के, हम मसीह के काम को अपने तय किए गए स्तर तक आगे नहीं बढ़ा पाएंगे।

इस पाठ/अध्याय के अंत में, आप अपने लक्ष्यों को कम शब्दों में वर्णित और स्पष्ट कर सकेंगे जो एक तरह से खास, मापने लायक, पाने लायक, वास्तविकता के करीब और समय से जुड़ा हो। हर दिन पिन्तेकुस्त के दर्शन को पूरा करने के लिए हमें इरादतन काम करना होगा।

लक्ष्य की स्थापना
हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

याद रखिए हम "हर देश और लोगों के समूह से 1,000,000+ शिष्यों की एक स्थायी वार्षिक कटनी" के लिए परमेश्वर पर विश्वास कर रहे हैं और उसके लिए काम कर रहे हैं।



लक्ष्य क्या है?

जैक कैनफील्ड, द *पावर ऑफ फोकस* में, लक्ष्य को "किसी योग्य उद्देश्य की पूर्ति होने तक निरंतर प्रयास करने" के रूप में परिभाषित करते है।

चल रहा	जारी रखना; इसमें समय लगता है
प्रयास	इसमें पीछा करना शामिल हो सकता है
उद्देश्य	इरादा (तन)
योग्य	कुछ मूल्यवान या प्रशंसनीय

रिक पिटिनो ने *अपनी पुस्तक 'सक्सेस इज़ अ चॉइस' में* समझाया, "सपने वो होते हैं जहाँ हम पहुँचना चाहते हैं। लक्ष्य वो होते हैं जिससे हम वहाँ पहुँचते हैं। सपने हमारे दर्शन होते हैं कि संघर्ष के बाद हम कहाँ हैं, सफ़र के अंत में इनाम। लक्ष्य वो व्यक्तिगत कदम होते हैं जो हम इनाम पाने के लिए उठाते हैं।"

चार्ल्स गिवेंस ने *सुपरसेल्फ में कहा,* "लक्ष्य आपके सपनों को पूरा करने की दिशा में कदम हैं।" गिवेंस ने आगे कहा, "सफलता आपके बताए गए लक्ष्यों को धीरे-धीरे, समय पर पाना है।"

लक्ष्य आपको वहां पहुंचाते हैं जहां आप जाना चाहते हैं।

एल्बर्ट हबर्ड ने कहा, "बहुत से लोग जीवन में योग्यता की कमी की वजह से नहीं, बल्कि सिर्फ़ इसलिए असफल हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने कभी अपनी ऊर्जा को किसी लक्ष्य के आस-पास व्यवस्थित नहीं किया।"

कलीसिया में लक्ष्य तय करने की बहुत कमी है। "कलीसिया के लक्ष्यों के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा एक धुंधली समझ है और सबसे बुरी बात यह है कि कलीसिया के लक्ष्य हैं या नहीं, इसके बारे में कोई परवाह नहीं है" *(बेली स्मिथ, रियल इवेंजलिज्म)।*

एल साल्वाडोर के पूर्व मिशनरी और ग्लोबल मिशन्स के महानिदेशक ब्रूस हॉवेल ने कहा, "एल साल्वाडोर कलीसिया सिर्फ़ उसी वर्ष आगे नहीं बढ़ी, जब उन्होंने लक्ष्य तय नहीं किए थे।"

शोध से पता चलता है कि सफलता का सबसे बड़ा कारण है, तय लक्ष्यों को पाने का जुनून। लक्ष्य हमें उद्धेश्य और दिशा देते हैं और यह तय करने में हमारी मदद करते हैं कि हम अपनी ऊर्जा कहाँ लगाएँगे।

लक्ष्यों के लिए दूसरे शब्दों में लक्ष्य, उद्देश्य, निशाना, मील का पत्थर, काम, कार्यभार, इच्छाएं और योजनाएं शामिल हैं। नेपोलियन हिल ने *थिंक एंड ग्रो रिच में* दावा किया कि सभी सफल लोगों में एक बात आम/सामान्य होती है: वे "एक खास लक्ष्य तय करते हैं और उस लक्ष्य को पाने के लिए एक योजना बनाते हैं।"

लंबे समय तक चलने वाली सफलता हर दिन जो हासिल होता है, उसका सीधा परिणाम होती है। लक्ष्य रोज़ाना की दिनचर्या में मदद करते हैं, हमें व्यवस्थित रखते हैं, और हमारे जीवन में अनुशासन लाते हैं। किसी ने सही कहा है कि समय के साथ बार-बार लिए गए सही फ़ैसले आखिरकार हमारी सफलता को बढ़ा देंगे।

पीटर एल. हिर्श ने *लिविंग विद पैशन में* नेपोलियन हिल के साथ हुई बातचीत के बारे में बताया। "अगर आप किसी भी काम में सफल होना चाहते हैं, तो आपको सिर्फ़ एक ही गुण की ज़रूरत होगी—

उद्धेश्य का पक्का होना। आपको पता होना चाहिए कि आप क्या चाहते हैं और उसे पाने की गहरी इच्छा होनी चाहिए।"

यीशु और लक्ष्य निर्धारण

यीशु के पास अपने जीवन के लिए एक योजना और उद्धेश्य था। बारह साल की उम्र में, उसने कहा, "मुझे अपने पिता के काम में लगे रहना है" (लूका 2:49)। अपनी पूरी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान, उसने अपने उद्धेश्य, दर्शन और लक्ष्य को समझाना जारी रखा।

- 🕮 "मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं" (यूहन्ना 10:10)।

- 🕮 "जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य हैं; वह रात आने वाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता" (यूहन्ना 9:4)।

- 🕮 "और मैं भी तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपना कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे" (मत्ती 16:18)।

क्योंकि यीशु अपने उद्धेश्य, दर्शन, मिशन और लक्ष्यों को जानता था, इसलिए वह क्रूस पर कह पाया, "पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30)।

पौलुस अपने दर्शन और लक्ष्यों को समझता था, और वह कह सका, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है" (II तीमुथियुस 4:7)।

अपनी दृष्टि इनाम पर रखें

फ्लोरेंस चैडविक, इंग्लिश चैनल (ब्रिटेन की खाड़ी) में तैरने की कोशिश में, ज़मीन से कुछ सौ मीटर पहले पानी से बाहर निकलने के लिए कह रही थी। जब उनसे पूछा गया, "आप पार क्यों नहीं कर पाईं?" तो उन्होंने कहा, "मैं कर लेती, लेकिन कोहरा छा गया और मुझे किनारा नहीं दिख रहा था। अगर मुझे

किनारा दिख जाता, तो मैं कर सकती थी।" अगर हम अपने लक्ष्य और दर्शन पर नज़र रखें, तो हम अंतिम रेखा तक पहुँच सकते हैं।

> यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूंपर उस पदा :र्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूंपरन्तु केवल यह एक काम करता हूं :, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। (फिलिप्पियों 3:12–14)।

लोग लक्ष्य क्यों नहीं बनाते?

बहुत कम लोग लक्ष्य तय करने के लिए ज़रूरी समय या मेहनत करते हैं।

1. उन्हें नहीं पता कि लक्ष्य कैसे तय करें।
2. वे जीवन भर बिना किसी योजना या दर्शन के उद्धेश्यहीन होकर भटक रहे हैं।

3. उन्होंने लक्ष्य तय करने की कोशिश की और असफल रहे।
4. वे लक्ष्य तय करने में बहुत आलसी हैं। लक्ष्य तय करने का मतलब आखिरकार काम करना है।
5. उनका दृष्टिकोण "मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता" वाला है। जो होगा, सो होगा।

लक्ष्य निर्धारण की मूल बातें

ऐसे लक्ष्य तय करने में मदद के लिए SMART संक्षिप्त रूप (हमारे इस्तेमाल के लिए बनाया गया) का इस्तेमाल करें जिन्हें पाया जा सके।

एस	विशिष्ट (केंद्रित)
एम	मापने योग्य
ए	प्राप्त करने योग्य

आर	वास्तविक/यथार्थवादी
टी	समय-संबंधी

SMART संक्षिप्त रूप के बिना दूसरी भाषाओं में अनुवाद के साथ इस्तेमाल करें।

1	विशिष्ट (केंद्रित)
2	मापने योग्य
3	प्राप्त करने योग्य
4	वास्तविक /यथार्थवादी
5	समय-संबंधी

लक्ष्य निर्धारण के लिए समय विभाजन	
अल्पकालिक लक्ष्य	एक वर्ष तक
मध्यावधि लक्ष्य	एक से पांच वर्ष
दीर्घकालिक लक्ष्य	पांच साल से अधिक

हर दिन पिन्तेकुस्त और लक्ष्य निर्धारण

हमें लक्ष्य तय करने चाहिए:

1. दैनिक
2. मासिक
3. त्रैमासिक
4. वार्षिक

हमें लक्ष्य तय करने चाहिए:

लक्ष्य की स्थापना
हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

1. व्यक्तिगत स्तर पर
2. स्थानीय स्तर पर
3. राष्ट्रीय स्तर पर
4. क्षेत्रीय स्तर पर
5. वैश्विक स्तर पर

अगर विश्व में हर यू पी सी (UPC) में हर महीने दो नए शिष्यों की बढ़ोतरी होती है, तो हमारे लक्ष्य हर दिन पिन्तेकुस्त में इसका परिणाम (हर वर्ष 45,000 x 2 x 12 = 1,080,000 नए शिष्य) होगा।

या वर्ष के हर दिन पिन्तेकुस्त के दिन का शुद्ध परिणाम (मूल पिन्तेकुस्त के दिन की तरह 3,000 x 365 = 1,090,000 हर वर्ष)।

पिछले वर्षों की तुलना में प्रतिशत बढ़ोतरी कुछ लोगों के लिए काम कर सकती है। प्रतिशत बढ़ोतरी हर देश में अलग-अलग होती है, जो लक्ष्यों और वास्तविकता पर निर्भर करती है (साफ़ है कि 5% बढ़ोतरी में बहुत समय लगेगा, लेकिन 20% बढ़ोतरी बहुत जल्दी होगी)।

हमारा ज़्यादातर प्रतिधारण (जुड़ाव) बाइबल अध्ययन, मित्रता और व्यक्तिगत संबंधों से होता है। इसमें महासभाओं और सम्मेलनों जैसी खास सभाओं में इरादतन बोना और काटना भी शामिल है। साथ ही, हमें अपनी राष्ट्रीय और स्थानीय कलीसियाओं को इन कार्यकर्मों के अलावा आत्माओं को जीतने और शिष्य बनाने की संस्कृति बनाने में मदद करनी चाहिए। इसके लिए कई तरह की पद्धति होनी चाहिए। सिर्फ सुसमाचार प्रचार और शिष्य बनाना ही काफी नहीं हैं।

प्रतिधारण (जुड़ाव) लक्ष्य काफी नहीं है। इन तीन रणनीतियों और पाँच प्रकार की सेवकाई के काम को एक में मिलाने से हम तेज़ी से लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

हर दिन पिन्तेकुस्त सिर्फ़ एक कार्यक्रम नहीं है; यह एक जीवनशैली और दृष्टिकोण है जो हमारे निर्णयों और लक्ष्यों को निर्देशित करता है। इसे पूरा करने के लिए हमें लक्ष्य तय करने होंगे।

हर दिन पिन्तेकुस्त एक साहसिक, परमेश्वर जैसा दर्शन है जिसके लिए हर स्तर पर मिलकर काम करने और सहयोग की ज़रूरत है। इसमें वैश्विक स्तर पर, विभागीय स्तर पर, क्षेत्रीय स्तर पर, स्थानीय स्तर

पर, सभी लोगों के समूह और भाषाएं शामिल है। ऐसे परमेश्वर जैसे दर्शन के लिए ऐसे लक्ष्य निर्धारित करने की ज़रूरत है जो उतने ही साहसिक हों, फिर भी ठोस, मापने लायक और वास्तविकता पर आधारित हों।

इस परमेश्वर जैसे दर्शन को मानवीय आकार के स्तरों में बदलना आवश्यक है।

इससे स्पष्टता और लागूकरण (कार्यान्वयन) आएगा।

ध्यान रखें कि इस आयाम (पैमाने) का दर्शन सिर्फ़ रणनीति से तय नहीं होता। प्रार्थना मुख्य नींव है, इसलिए मध्यस्थता के दल, प्रार्थना और उपवास की ज़रूरत होगी। हर दिन पिन्तेकुस्त एक प्रार्थना से चलने वाला दर्शन है।

किसी ने कहा है, "जिसे मापा जाता है, वह बढ़ता है।" तो इसका जश्न मनाने की ज़रूरत है। लक्ष्य प्राप्ति का जश्न मनाने से उनके दोबारा होने को बढ़ावा मिलता है और प्रचार–प्रसार की आदतें बनाने में मदद मिलती है। इससे संस्कृति बनती है!

एक मापने या सूचना प्रणाली (रिपोर्टिंग सिस्टम) बनाएं।

नियमित जांच से जवाबदेही, अनुकूलन और लागूकरण को बढ़ावा मिलेगा।

आप सिर्फ़ लक्ष्य तय नहीं कर रहे हैं; आप शिष्य बनाने की प्रणाली बना रहे हैं।

GATS (ग्लोबल एसोसिएशन ऑफ़ थियोलॉजिकल स्टडीज़) अलग-अलग संस्कृति में शिष्य बनाने के लिए शिष्य बनाने की सामग्री उपलब्ध करा रहा है।

ब्रैड थॉम्पसन ने हाल ही में UPC ग्वाटेमाला के सेवकों के सामने हर दिन पिन्तेकुस्त दर्शन को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह दर्शन बहुत व्यावहारिक है। "हम सिर्फ़ दर्शन नहीं दे रहे हैं और यह नहीं बता रहे हैं कि हमें ऐसा *क्यों* करना है, बल्कि हम यह भी बता रहे हैं कि यह *कैसे* किया जा सकता है।"

थॉम्पसन ने बताया, "हम तीन स्तर पर शिष्यत्व का प्रशिक्षण दे रहे हैं — बच्चे, युवा और वयस्क। हर वर्ग के लिए, कम से कम तीन शिष्यत्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकल्प हैं — एक आसान, एक गहरा लेकिन बिना चित्रण (ग्राफ़िक्स) वाला, और एक ज़्यादा पेशेवर चित्रण (ग्राफ़िक्स) वाला। सेवकों को यह विचार बहुत पसंद आया।"

उन्होंने कहा, "हर महीने दो आत्माएं ज़रूरी हैं। जब मैं इसे उनके स्तर पर लाया, तो मैं पसबानों की आँखों में ज्योति देख सकता था — वे इसे पूरा करने के लिए क्या कर सकते हैं। लेकिन यह पूरी तरह से शिष्य बनाने से भी जुड़ा था। मैंने समझाया कि सिर्फ़ दो आत्माओं को बपतिस्मा देना या उन्हें पवित्र आत्मा से भरना काफ़ी नहीं है। उन्हें कटनी को स्थायी (टिकाऊ) बनाने के लिए उन्हें शिष्य बनाना होगा। इसलिए दो मुख्य शब्द हैं — 'शिष्य बनाना' और 'स्थायी।' यह सिर्फ़ एक दर्शन को प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि दूसरों को लक्ष्य देना और उन्हें इसे पूरा करने के लिए उपकरण देना है।"

निष्कर्ष:

केन ब्लैंचर्ड और स्पेंसर जॉनसन ने अपनी *पुस्तक 'वन मिनट मैनेजर' में* सिखाया है कि एक लक्ष्य और उसका प्रदर्शन मानक 250 शब्दों या उससे कम में लिखा जाना चाहिए। लक्ष्य का छोटा होना यह पक्का करता है कि कोई भी इसे एक मिनट में पढ़ सके।

एक छोटी लड़की चित्र बना रही थी, तभी उसके गर्वित पिता ने देखा। उसने उसकी तारीफ़ की और पूछा, "तुम इतना अच्छा चित्र कैसे बना लेती हो?"

उसने जवाब दिया, "पहले मैं सोचती हूँ। और फिर मैं अपनी सोच बनाती हूँ।"

लक्ष्य निर्धारित करना "अपनी सोच को दिखाना" है। "अपनी सोच" को लिखकर रखना अच्छा है। लक्ष्य निर्धारित करना और दर्शन साथ-साथ चलते हैं।

लक्ष्य निर्धारित करने में एक काम की अवधारणा है **MAP** : सेवकाई कार्रवाई योजना। अपने अगुवों के साथ मिलकर अगले साल के लिए तीन से पांच लक्ष्य चुनें, जिन पर आप अपनी सेवकाई के हिस्से के तौर पर काम कर सकें। जवाबदेही होना याद रखें। इसका मतलब है कि अपने अगुवे को आपके बताए गए लक्ष्य पर आगे की कार्यवाही करने और यह देखने की इजाज़त देना कि वे प्रभावशाली तरीके से पूरे हुए हैं या नहीं।

नीचे इन तीन से पांच लक्ष्यों की सूची बनाएं:

लक्ष्य की स्थापना
हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

1._____

_____

_____

_____

_____

2._____

_____

_____

_____

_____

3._____

_____

_____

_____

_____

4._____

_____

लक्ष्य की स्थापना
हर दिन पिन्तेकुस्त श्रृंखला

_____

_____

_____

5._____

_____

_____

_____

_____